SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति

जुलाई 2025 से दिसंबर 2025

अंक सोलहवां

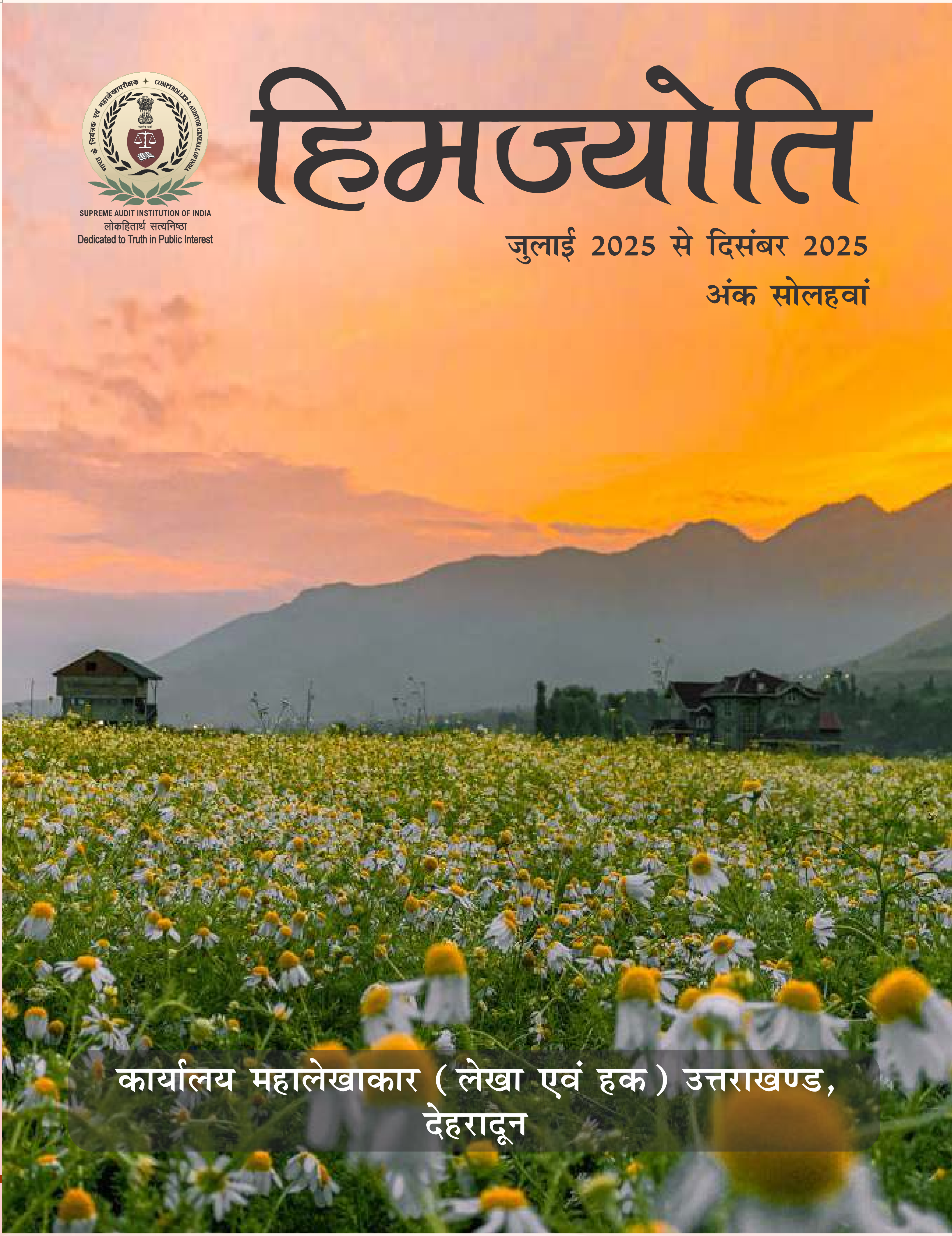

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) उत्तराखण्ड,
देहरादून

चित्रकार- कुमारी अंतरा सुमन
पुत्री श्री कुमार अभय,
सहायक लेखाधिकारी

जुलाई 2025 से दिसंबर 2025, अंक सोलहवां
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक) उत्तराखण्ड,
देहरादून

सत्यमेव जयते

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव उर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिन्दी

चित्रकार- विहान पाराशर
पुत्र सुश्री पूनम शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

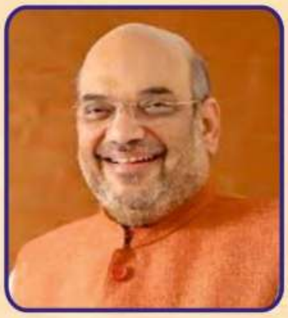

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

मो. परवेज़ आलम
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “हिमज्योति” का 16वाँ अंक प्रकाशित होकर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका केवल एक साहित्यिक संकलन मात्र नहीं है, बल्कि हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता, प्रतिबद्धता एवं निरंतर प्रयासों का सशक्त प्रतीक भी है। “हिमज्योति” ने समय के साथ-साथ हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उसके प्रभावी क्रियान्वयन में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा गतिविधियों में हमारे कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी उत्साहपूर्वक सहभागिता निभा रहे हैं और अपने दैनिक कार्य-व्यवहार, पत्राचार, टिप्पणियों एवं अभिलेखन में हिन्दी के प्रयोग को निरंतर सुदृढ़ कर रहे हैं। हिन्दी कार्यशालाएँ कर्मचारियों को शासकीय हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग, शब्दावली एवं तकनीकी पक्षों से परिचित कराने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो रही हैं।

“हिमज्योति” का यह अंक इन्हीं रचनात्मक एवं राजभाषा गतिविधियों की परिणति है। इस अंक में सम्मिलित लेख, कविताएँ, संस्मरण एवं विचारात्मक रचनाएँ न केवल लेखकों की साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देती हैं, बल्कि हिन्दी भाषा की सरलता, अभिव्यक्ति-क्षमता और प्रभावशीलता को भी उजागर करती हैं। यह पत्रिका हमारे सहकर्मियों को हिन्दी में सोचने, लिखने और सृजन करने के लिए प्रेरित करती है।

यह अत्यंत सराहनीय है कि कार्यालय के व्यस्त कार्यदायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ हमारे अधिकारी व कर्मचारी साहित्यिक गतिविधियों में भी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे है। साथ ही साथ मैं यह भी उम्मीद करता हूँ कि सभी कार्मिक राजभाषा हिन्दी में कार्य करें एवं अपनी अपनी रचनाएँ भी दें।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के संपादक मंडल, सभी रचनाकारों, हिन्दी पखवाड़ा एवं अन्य राजभाषा कार्यक्रमों के आयोजकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। उनके समर्पित प्रयासों से ही “हिमज्योति” प्रत्येक अंक के साथ अधिक उत्कृष्ट, प्रभावशाली और सार्थक होती जा रही है।

आइए, हम सभी मिलकर हिन्दी को अपने कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग बनाएँ और राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए “हिमज्योति” को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ “हिमज्योति” की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

मुख्य संरक्षक

चित्रकार- कुमारी दिशानी साहा
पुत्री श्री दीपक साहा,
सहायक लेखाधिकारी

सत्यमेव जयते

श्री लोकेश दताल
वरिष्ठ उपमहालेखाकार
(प्रशासन एवं निधि)

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" का 16वाँ अंक प्रकाशित होकर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। हिन्दी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ देश की सांस्कृतिक, बौद्धिक और भावनात्मक एकता का सशक्त माध्यम है। शासकीय कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग प्रशासन को सरल, प्रभावी और जनसुलभ बनाता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमारे कार्यालय में समय-समय पर हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी दिवस, राजभाषा कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य विविध गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहा है। इन आयोजनों के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुचि, आत्मविश्वास और प्रयोग की प्रवृत्ति को निरंतर प्रोत्साहन मिलता है।

पत्रिका के संपादक मंडल तथा कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप "हिमज्योति" प्रत्येक अंक के साथ गुणवत्ता, विषयवस्तु और प्रभाव में निरंतर समृद्ध होती जा रही है। आज के तीव्र परिवर्तनशील युग में आवश्यकता है कि हम अपनी सांकृतिक जड़ों से जुड़े रहते हुए नवीनता को भी अपनाएँ।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल, लेखकों और सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि "हिमज्योति" ज्ञान और संस्कार की यह ज्योति निरंतर प्रज्वलित रखेगी और समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करती रहेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "हिमज्योति" का यह अंक पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि राजभाषा हिन्दी के प्रति सम्मान,अपनत्व और प्रयोग की भावना को भी और अधिक सुदृढ़ करेगा। आइए, हम सब मिलकर हिन्दी को अपने कार्य-व्यवहार की मुख्य धारा बनाते हुए इस पत्रिका को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाएँ।

"हिमज्योति" इस समन्वय का सुन्दर माध्यम बनकर साहित्य, कला, शिक्षा और समाजसेवा के विविध आयामों को एक सूत्र में पिरोती रहे। यह मंच नई प्रतिभाओं को अवसर दे, अनुभवी लेखकों को अभिव्यक्ति का विस्तार दे और पाठकों के मन में विचारों की नई रोशनी प्रज्वलित करे।

लोकेश दताल

संरक्षक

चित्रकार- कुमारी पलक
पुत्री श्री विक्रांत कुमार
सहायक लेखाधिकारी

सत्यमेव जयते

श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई
उपमहालेखाकार
(लेखा एवं वी.एल.सी.)

संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" का 16वाँ अंक प्रकाशित होकर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका विगत वर्षों से न केवल कार्यालय की साहित्यिक एवं बौद्धिक गतिविधियों का दर्पण रही है, बल्कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है।

राजभाषा हिन्दी का उद्देश्य केवल शासकीय कार्यों को सुगम बनाना ही नहीं, बल्कि प्रशासन और आम नागरिक के बीच सशक्त एवं संवेदनशील संवाद स्थापित करना भी है। इस दृष्टि से "हिमज्योति" जैसी पत्रिकाएँ राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक वातावरण के निर्माण में अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं। राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग तभी संभव है जब हम इसे अपने दैनिक कार्य-व्यवहार, पत्राचार, टिप्पणियों एवं विचार-विमर्श का स्वाभाविक माध्यम बनाएं। इस दिशा में "हिमज्योति" एक प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य कर रही है, जो हमें हिन्दी में सोचने, लिखने और सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करती है। हमारी पत्रिका का प्रत्येक अंक हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक सोच, साहित्यिक अभिरुचि और वैचारिक समृद्धि को उजागर करता है।

यह अत्यंत सराहनीय है कि कार्यालय के व्यस्त कार्यदायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी साहित्यिक गतिविधियों में भी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। यह सहभागिता दर्शाती है कि हमारा कार्यालय केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि सृजनशीलता, विचार-विमर्श और सांस्कृतिक चेतना को भी समान महत्व देता है।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के संपादक मंडल, सभी रचनाकारों तथा इस अंक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले समस्त सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। उनके अथक प्रयासों से ही "हिमज्योति" निरंतर प्रगति कर रही है और प्रत्येक अंक पूर्ववर्ती अंकों की तुलना में अधिक उत्कृष्ट रूप में पाठकों के समक्ष आ रहा है।

इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ, "हिमज्योति" की सतत प्रगति और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

विशेष सहयोग

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

मो. परवेज़ आलम

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

संरक्षक

श्री लोकेश दताल

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं निधि)

विशेष सहयोग

श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई

उपमहालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)

प्रधान संपादक

श्री सुशील कुमार देवली

वरिष्ठ लेखाधिकारी

संपादक

श्री विक्रांत कुमार

सहायक लेखाधिकारी

साज-सज्जा

सुश्री ज्योति रानी समाद्दार

कनिष्ठ अनुवादक

टंकण

श्री राम सुब्रमणियन

लिपिक

(रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।)

प्रशंसा पत्र

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2025-26/ 564 दिनांक : 10.11.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

विषय:- हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के 15वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 17.10.2025

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के 15वें अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं छायांकन आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियां एवं छायाकारों द्वारा प्रस्तुत चित्र मनमोहक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय, बोधगम्य एवं रोचक हैं। विशेषतः 'घर की दीवारें', 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी', 'बहन जी', 'जीना आ गया', [illegible], 'तनख्वा' एवं 'आसमानी मछलियाँ' बोधगम्य एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

Phone: 0532-2423485 Fax: 0532-2423485 E-mail: rtiallahabad@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1195754/2025 दिनांक:11-11-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) उत्तराखण्ड
देहरादून-248195

विषय:- हिंदी पत्रिका हिमज्योति' के 15वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका "हिमज्योति" के15वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका हेतु सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। डॉ. दिनेश शर्मा की "सम्पादन कला और कौशल" श्री विनोद कुमार शर्मा की "हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का स्वर्णिम काल", श्री विकान्त कुमार की "जीना आ गया" एवं श्री प्रशांत जोशी की "घर की दीवारें" आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की सृजनशीलता के उत्थान एवं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, कोलकाता
तीसरा एम.एस.ओ. बिल्डिंग, सी.जी.ओ. कम्प्लेक्स, पाँचवाँ तल, ए-विंग, डी.एफ. ब्लाक, साल्ट लेक, सेक्टर-1, कोलकाता-700064

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE, KOLKATA
3rd MSO Building, CGO Complex, 5th Floor, 'A' Wing, DF Block, Salt Lake, Sector - I, Kolkata - 700 064

संख्या .क्षे.क्ष.नि.व.ज्ञा.सं/कोल/प्रशं.पत्र/2024-25/ 1561 दिनांक: 12/11/2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), उत्तराखण्ड
ऑडिट भवन, कौलागढ़
देहरादून- 248195

विषय: कार्यालयीन हिन्दी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के 15वें अंक का प्रेषण

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के 15वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी, हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का स्वर्णिम काल, जीना आ गया एवं मैं यहाँ खुश आदि रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकार एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/प्रशासन

दूरभाष : 033- 2321 3907/033-2321 6708 ई-मेल : rtikolkata@cag.gov.in

---

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2025-26/123 दिनांक:- 17 .12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.),
उत्तराखंड

विषय : हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के 15वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपकी हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" के 15वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"हिमज्योति" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "घर की दीवारें", "सम्पादन कला और कौशल", "बहन जी" और "आसमानी मछलियाँ" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

Mulagada Aari
17-12-2025
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

प्रशंसा पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001

OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/604 — दिनांक: 03.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून - 248 195.

विषय- हिंदी गृह पत्रिका - **'हिमज्योति'** के 15वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर दिनांक 17.10.2025, अपराह्न 08:37:57 बजे ई-मेल के माध्यम से आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - **'हिमज्योति'** के 15वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरक तथा प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - **'हिमज्योति'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu ई-मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.L/2025-26/25358 — दिनांक: 08.12.2025

सेवा में,	To,
सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), उत्तराखण्ड, ऑडिट भवन, कौलागढ़, देहरादून- 248195.	The Assistant Director (OL), O/o The Accountant General (A&E), Uttarakhand, Audit Bhawan, Kaulagarh, Dehradoon-248195.

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र - संबंधी

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिन्दी गृह पत्रिका "हिमज्योति" [illegible] इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका हेतु हृदय से आभार। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं उच्च स्तर की हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका अत्यंत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक एवं हृदय को भावविभोर करने वाली रचनाएँ हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। "हिमज्योति" पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल), डीएफ-ब्लॉक,
सेक्टर-1
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

Supreme Audit Institution of India
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK,
SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA - 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/72 — दिनांक:- 29/10/2025
No. - H.C/P. P/

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
उत्तराखण्ड, ऑडिट भवन, कौलागढ़,
देहरादून-248195

To,
The Assistant director/ O.L.
Office of the Accountant General (A&E),
Uttarakhand, Audit Bhawan,
Kaulagarh, Dehradun-248195

विषय: कार्यालय की वार्षिक हिंदी ई पत्रिका 'हिमज्योति' के 15वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'हिमज्योति' के 15वें अंक के ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- घर की दिवारें, साथी, गाँव में सरकारी कर्मचारी की व्यथा,ले चलो मुझे, बहन जी, रंग रूप तथा तनहा आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंको के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001

OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/604 — दिनांक: 03.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून - 248 195.

विषय- हिंदी गृह पत्रिका - **'हिमज्योति'** के 15वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर दिनांक 17.10.2025, अपराह्न 08:37:57 बजे ई-मेल के माध्यम से आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - **'हिमज्योति'** के 15वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरक तथा प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका - **'हिमज्योति'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना	विधा	रचनाकार (सर्वश्री)	पृष्ठ सं.
1.	समय की धारा में	लेख	विक्रान्त कुमार, स.ले.अधिकारी	12
2.	निम्नगा और पाषाण	कविता	डॉ. दिनेश शर्मा, स.ले.अधिकारी	14
3.	हिमालय का महाकुंभ है माँ नंदादेवी राजजात	लेख	बृजभूषण सेमवाल, वरि.लेखाकार	15
4.	अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन-2025: एक परिचय	लेख	ज्योति रानी समाद्दार, कनि. अनुवादक	17
5.	गीत	कविता	दीपक उज्जवल, आँ.प्र.सं.	20
6.	नन्ही सी जान:-गौरैया	कविता	अरविन्द सिंह रावत, लेखाकार	21
7.	नारी	कविता	शिवम लिल्हौरी, लेखाकार	22
8.	हिमालय की गोद में: मेरी एक रूहानी यात्रा	यात्रा वृत्तान्त	मयंक मथेला, लेखाकार	24
9.	पल भर का ठहराव	कविता	मुकुल चौहान, लेखाकार	26
10.	अंतिम महीने के अंतिम दिन	कविता	प्रिया गुप्ता, पत्नी मुकुल चौहान, लेखाकार	27
11.	भूटान-यात्रा वृत्तान्त	यात्रा वृत्तान्त	अंकित भट्ट, लेखाकार	28
12.	मैं और वो	कविता	शिवम सिंह, खण्डीय लेखाधिकारी	30
13.	चिड़िया	कविता	पूनम शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा)	31
14.	जुगनू वाली रात की कहानी	लेख	शिवम सिंह, खण्डीय लेखाधिकारी	32
15.	साहस की लहरें-मेरा ऋषिकेश एडवेंचर	संस्मरण	प्रभात कुमार द्विवेदी, खण्डीय लेखाकार	35
16.	भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी	लेख	विनोद कुमार शर्मा, वरि.ले.अधिकारी (से.नि.)	37
17.	मेरी मथुरा यात्रा	संस्मरण	राजेश अधिकारी, बाहयस्रोतकर्मी	38
18.	बनराकस	लेख	सत्य प्रकाश सिंह, स.ले.अधिकारी	40

समय की धारा में

विक्रांत कुमार
सहायक लेखाधिकारी

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब॥"
— संत कबीरदास

अर्थ : जो कार्य कल के लिए टाल रखा है, उसे आज करो और जो आज करना है, उसे अभी करो, क्योंकि समय एक क्षण में समाप्त हो सकता है और फिर अवसर लौटकर नहीं आता।

उक्त पंक्तियाँ हम सभी ने अवश्य पढ़ी होंगी और शायद हम में से कुछ इसका पालन भी करते होंगे वास्तव में समय जीवन की वह अदृश्य शक्ति है, जो बिना रुके, बिना थके निरंतर बहती रहती है। न वह किसी की प्रतीक्षा करता है, न किसी की विवशता को समझता है। मनुष्य चाहे कितना भी सामर्थ्यवान क्यों न हो, समय के सामने वह सदैव छोटा ही रहता है। समय की धारा में बहते हुए ही जीवन जन्म लेता है, विकसित होता है और अंततः उसी में विलीन हो जाता है। इसलिए कहा गया है कि जिसने समय का मूल्य समझ लिया, उसने जीवन का रहस्य जान लिया।

भारतीय दर्शन में समय को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

"कालः कलयतामहम्",

अर्थात् गणना करने वालों में मैं समय हूँ। यह कथन स्पष्ट करता है कि समय केवल माप की इकाई नहीं, बल्कि सृष्टि का मूल अनुशासन है। सूर्य का उदय-अस्त, ऋतुओं का परिवर्तन, मनुष्य का जन्म और मृत्यु—सब समय के नियम से बंधे हैं। यदि यह नियम टूट जाए, तो सृष्टि का संतुलन नष्ट हो जाएगा। पृथ्वी पर जो जन्मा है समय के साथ बहकर अपने अंत को भी प्राप्त हुआ है| अतः जीवन प्राप्त हुआ है कुछ विशेष करके जाने हेतु, प्रतिक्षण यही प्रयास रहे कि जीवन के उद्देश्य को पूर्ण कैसे करें? कैसे हम अपने दायित्वों को पूर्ण करें? समय तो रुकेगा नहीं, रुक भी नहीं सकता। कैसे रुकेगा या तो हम समय के साथ बह सकते हैं या समय हमारे आप-पार बह जाएगा। बहेगा अवश्य रुकेगा नहीं।

समय की धारा में बहना ही जीवन का मूल उद्देश्य है, कितना भी प्रयास किया जाए परंतु बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। यह सत्य जितना सरल है, उतना ही कठोर भी। लोक कवि की उक्ति—

"अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत"

हमें चेतावनी देती है कि अवसर निकल जाने के बाद पश्चाताप व्यर्थ होता है। भूतकाल की गलतियों से सीख लें, वर्तमान में सुधार करने चाहिए, न कि उन भूलों को याद कर मन को चिंतित करते रहें| जीवन में अनेक क्षण ऐसे आते हैं, जब समय हमें पुकारता है, पर हम आलस्य, असमंजस या अहंकार में उसे अनसुना कर देते हैं। बाद में वही क्षण स्मृति बनकर हमें कचोटते हैं। समय अनुसार खुद में बदलाव भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है, बदलाव अवश्यंभावी है, पर यदि हम समय की आवश्यकता को समझते हुए स्वयं को निरंतर अद्यतन एवं सक्षम बनाते रहें, तो यही परिवर्तन हमारे कार्य को अधिक प्रभावी, सरल और परिणामोन्मुख बना देते हैं। आज मुख्यालय द्वारा आकड़ों पर आधारित लेखापरीक्षा (Data Led Inspection/Audit) की दिशा में बढ़ाया गया कदम भी इसी सकारात्मक प्रगति का संकेत है, जो भविष्य में कार्यप्रणाली को और अधिक पारदर्शी, त्वरित एवं दक्ष बनाएगा।"

तुलसीदास जी ने भी समय की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा है—

"समय चूक पुनि का पछताना।"

अर्थात् समय निकल जाने पर पछताना किसी काम का नहीं। विद्यार्थी यदि समय रहते अध्ययन न करे, कर्मचारी यदि समय रहते कर्तव्य न निभाए और मनुष्य यदि समय रहते अपने संबंधों को न सँवारे, तो जीवन में रिक्तता ही शेष रह जाती है। वास्तव में जीवन का सबसे मूल्यवान क्षण वर्तमान है। भूतकाल स्मृतियों का भंडार है और भविष्य केवल कल्पना, पर वर्तमान ही वह धरातल है जहाँ कर्म संभव है। अतः भूत की भूलों से केवल सीखें उससे वर्तमान को प्रभावित केवल सुधारों के माध्यम से करें| भगवान बुद्ध के अनुसार, मनुष्य को प्रत्येक क्षण सजग होकर जीना

चाहिए, क्योंकि यही क्षण जीवन है। समय और कर्म का संबंध अत्यंत गहरा है। गीता का प्रसिद्ध श्लोक—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

हमें सिखाता है कि हमारा अधिकार कर्म पर है, फल पर नहीं। जो व्यक्ति सही समय पर ईमानदारी से कर्म करता है, समय स्वयं उसे फल प्रदान करता है। स्पष्ट है यदि हमारा कर्म सही दिशा में उचित प्रकार से किया जाएगा तो परिणाम भी उचित ही प्राप्त होंगे, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी कहा है—

"क्षण को जीना सीखो, युग अपने आप जिएगा।"

अर्थात् जो व्यक्ति वर्तमान क्षण को सार्थक बना लेता है, उसका भविष्य स्वतः उज्ज्वल हो जाता है। आज कार्यालय में अनेक कार्मिक एवं अधिकारी ऐसे हैं जिनका सेवा अनुभव 20-25 वर्षों से अधिक है। यह अनुभव केवल कार्यकाल की अवधि नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुशासन एवं कार्यकुशलता की अमूल्य पूंजी है। समय के साथ नई कार्यप्रणालियाँ, तकनीक एवं दायित्व अवश्य जुड़ते हैं, और यही अवसर हमें निरंतर सीखने, स्वयं को अद्यतन करने तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सशक्त कार्य-संस्कृति स्थापित करने की प्रेरणा देते हैं।

आज प्रशासनिक व्यवस्था तीव्र गति से तकनीक, डेटा आधारित कार्यप्रणाली एवं दक्षता की ओर अग्रसर है। यह परिवर्तन किसी चुनौती के रूप में नहीं, बल्कि स्वयं को और अधिक सक्षम, प्रभावी एवं प्रासंगिक बनाने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। यदि हम अपने दायित्वों का निर्वहन समयानुसार नवाचार, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व के साथ करें, तो न केवल संस्थागत व्यवस्था मजबूत होगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणादायी एवं सुदृढ़ प्रशासनिक आधार तैयार होगा।

सरकारी सेवा केवल रोजगार नहीं, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का माध्यम है। इसलिए आवश्यक है कि हम अनुभव के साथ नवीन ज्ञान को जोड़ते हुए स्वयं को निरंतर विकसित करें, ताकि भविष्य की पीढ़ियाँ सरकारी सेवा को केवल इतिहास के रूप में नहीं, बल्कि उत्कृष्ट जनसेवा एवं विश्वास के प्रतीक के रूप में देखें।

जो व्यक्ति समय को नष्ट करता है, वह वास्तव में अपने जीवन को नष्ट करता है। धन, वैभव और पद फिर से प्राप्त किए जा सकते हैं, पर नष्ट हुआ समय कभी वापस नहीं आता। कबीरदास जी ने धैर्य और समय की लय को समझाते हुए कहा—

"धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।"

उक्त पंक्तियों से हमें सीख मिलती है कि समय का सम्मान अधीरता से नहीं, बल्कि संतुलन और निरंतर प्रयास से होता है। प्रयास निरंतर करना चाहिए, सुधार की संभावना हमेशा विद्यमान रहती है| आज जो हम कर रहे हैं या कर सकते हैं कल हम उससे बेहतर कर सकते हैं, तब भी हम जीवन के इस संघर्ष में टिक सकते हैं, आपको याद होगा एक समय था जब मोबाईल कंपनी नोकिया का एकछत्र राज मोबाईल बाजार में था, परंतु उसने समय अनुसार बदलाव स्वीकार कर खुद को नहीं बदला जिसका परिणाम आज प्रत्यक्ष है|

समय केवल कार्यों के लिए ही नहीं, संबंधों के लिए भी आवश्यक है। माता-पिता, परिवार और मित्र—इन सबको दिया गया समय ही संबंधों को जीवंत बनाता है। महादेवी वर्मा की पंक्ति—

"वक़्त पर जो न मिले, वही सबसे क़ीमती होता है"

इस सत्य को गहराई से व्यक्त करती है। जो व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ के लिए समय बचाता है, वह अंततः अकेला रह जाता है। वास्तव में परिवार को दिया गया समय ईंटों की बीच लगाए सीमेंट की तरह कार्य करता है जो परिवार के हर सदस्य को जोड़ने का कार्य करता है। जितना महत्व कार्य का है उतना ही महत्व परिवार, मित्रों एवं संबंधियों का भी है। सबके साथ जुड़े रहना भी आवश्यक है इसमें आपके द्वारा इस कार्य को दिया गया समय अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

अंततः समय एक नदी के समान है। जो तैरना जानता है, वह पार उतर जाता है और जो बहाव के विरुद्ध खड़ा होता है, वह थककर टूट जाता है। समय न मित्र है, न शत्रु—वह तो न्यायी है। जैसा हम उसे देते हैं, वैसा ही वह हमें लौटाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम समय का सम्मान करें, वर्तमान में सजग रहें और कर्म को अपना धर्म बनाएँ। क्योंकि वास्तव में, समय की धारा में वही सफल होता है, जो समय को साध लेता है।

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।"
-बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

निम्नगा और पाषाण

डा. दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी

निम्नगा हो तुम, मैं मार्ग का पाषाण।
जीवन्त तुम प्रवाह से, मैं पड़ा निष्प्राण।
तुम हो सुधा की धार, मैं हूँ विष का बाण।
तुमसे ही तो जग गुंजित है, मैं नीरव शम्शान।।
तुम हो प्रेम-प्रकाश, मैं हूँ अंधा-ज्ञान।
शुभचिंतन हो तुम, मैं अहम् का प्रमाण।
शान्ति सद्भाव हो तुम, मैं तिरस्कार अपमान।
मैं भूला इतिहास, तुम सभ्यता का अभिमान।।
वेदना से दूर तुम, मुझमें व्यथा का वास।
तुम हँसी की रागिनी, मैं हृदय का त्रास।
तुम निश्छल निर्मल, मेरा सदा धूल में वास।
तुम चलायमान सर्वदा, मैं विराम की आस।।
अनन्त जल से भरी तुम, मैं ताकता शून्य आकाश।
पूर्ण चंद्र सम तेज तुम्हारा, मैं तड़ित प्रकाश।
तुम हो सत्य अमर, मैं क्षण का विलास।
तुमसे ही जग जीवन पाता, तुमसे ही यह श्वास।।
मैं तो विस्मृत पन्ना हूँ, तुम पुस्तक की पहचान।
तुम अर्घ्य कलश हो देवों का, मैं प्रेत के घड़े समान।
निम्नगा हो तुम, मैं मार्ग का पाषाण।।
निम्नगा हो तुम, मैं मार्ग का पाषाण।।

हिमालय का महाकुंभ है माँ नंदा देवी राजजात

बृजभूषण सेमवाल
वरिष्ठ लेखाकार

देवभूमि उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्रों की माँ कुलदेवी 'नंदा' इस हिमालयी भूमि के चमोली नौटी गाँव में आज भी विराजमान हैं। माँ कुलदेवी 'नंदा' सांस्कृतिक, धार्मिक श्रद्धा और विदाई का प्रतीक हैं। माँ नंदा हिमालय की बेटी है। नौटी गाँव नंदा देवी का मायका (मंदिर) है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, नंदा देवी को माता पार्वती का ही एक रूप माना जाता है। नंदा को राजा दक्ष की पुत्री माना जाता है | सतयुग में दक्ष प्रजापति की पुत्री सती (नंदा) का विवाह शिव से हुआ था, जो भगवान शिव की अर्धांगिनी हैं। हिमालय की पुत्री होने के कारण उन्हें 'नंदा' कहा गया। चमोली में स्थित नंदा देवी पर्वत (7,816 मीटर) को उनका दिव्य निवास स्थल माना जाता है| मध्यकाल में कत्यूरी राजा नंदा देवी को अपनी ईष्ट देवी के रूप में पूजा करते थे | हर 12 वर्ष में एक बार विश्व प्रसिद्ध 'नंदा देवी राजजात आयोजित होती है। इसे "हिमालय का महाकुंभ" कहा जाता है। माना जाता है कि नंदा अपने मायके से अपने ससुराल कैलाश जा रही हैं। इस यात्रा का नेतृत्व एक चार सींगों वाला मेढ़ा (खाडू) करता है, जिसे चौसिंग्या खाडू कहा जाता है | स्थानीय मान्यता के अनुसार, जब यह विशेष मेढ़ा पैदा होता है, तभी राजजात का आयोजन सुनिश्चित होता है। यह मेढ़ा पूरी यात्रा में आगे-आगे चलता है और अंत में 'होमकुण्ड' के पास जाकर अकेला हिमालय की ओर निकल जाता है, जिसे देवी का वाहन माना जाता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कहा जाता है, कि सतयुग में दक्ष प्रजापति की पुत्री सती (नंदा) का विवाह शिव से हुआ था। नंदा अपने मायके से ससुराल कैलाश चली गयी थी, कुछ साल बाद जब माँ 'नंदा' ने अपने मायके वालों को सन्देश भेजा कि मुझे मायके की बहुत याद आ रही है। मुझे लेने आओ परन्तु मायके वाले माँ 'नंदा' को बुलाना भूल गये तब माता ने क्रोधित होकर मायके में अकाल का दोष दे दिया और वहां हाहाकार मच गया | तब माँ 'नंदा' के मायके वालों ने किसी ज्योतिष से परामर्श लिया और पता चला कि माँ 'नंदा' का दोष लगा है तब माँ 'नंदा' को मायके बुलाया गया, माँ 'नंदा' 12 वर्ष बाद ससुराल से मायके आयी थी तब से हर 12 वर्ष बाद माँ का भव्य स्वागत और विदाई की जाती है| इसमें माँ के भक्तजनों का जनसैलाब उमड़ता है | माँ के लिए मंगल गीत गाये जाते हैं |माँ कुलदेवी 'नंदा' को सांस्कृतिक, लोक नृत्य,धार्मिक ,श्रद्धा और भावपूर्ण विदाई दी जाती है, तब से इसे हिमालय का महाकुंभ, माँ नंदा देवी राजजात भी कहा जाता है।

चमोली जिले के नौटी गाँव में नंदा देवी का मंदिर है। यहाँ से राजकुँवर और पुरोहित पूजा-अर्चना के बाद 'रिंगाल की छड़ी' और 'चौसिंग्या खाडू' (चार सींगों वाले मेढ़े) के साथ यात्रा शुरू करते हैं। कासुंवा के कुंवर (राजवंश के वंशज) देवी की स्वर्ण प्रतिमा और छतोली (छत्र) लेकर चलते हैं। राजजात यात्रा लगभग 280 किलोमीटर की पैदल यात्रा है, जो 19-20 दिनों में पूरी होती है। ईड़ा बधानी द्वारा यहाँ भगवती नंदा का स्वागत उनकी 'धर्म बहन' के रूप में किया जाता है। स्थानीय लोग यहाँ अपनी बेटियों की तरह नंदा का सत्कार करते हैं। नंदकेशरी वह स्थान है जहाँ कुमाऊं से आने वाली 'नंदा की डोली' (अल्मोड़ा और अन्य क्षेत्रों से) मुख्य राजजात यात्रा में आकर मिलती है। यहाँ गढ़वाल और कुमाऊं की संस्कृतियों का भव्य मिलन होता है। कुलसारी नंदा देवी का एक प्राचीन मंदिर है। यहाँ यात्रा के दौरान अर्धरात्रि में विशेष पूजा होती है। यह पड़ाव अपनी शांत वादियों के लिए प्रसिद्ध है। चेपड़्यूं में स्थानीय ग्रामीणों द्वारा माँ कुलदेवी 'नंदा' का भव्य स्वागत किया जाता है और लोकगीत गाया जाता है। नकोट सुंदर पहाड़ी दृश्यों के बीच छोटा पड़ाव है मुंदोली / लोहाजंग| यहाँ से चढ़ाई कठिन होने लगती है और हिमालय करीब आता है। अंतिम गाँव माणा है, इसके बाद कोई आबादी नहीं मिलती। माणा गाँव में प्रसिद्ध 'लाटू देवता' का मंदिर है, यहाँ पर लाटू देवता की पूजा होती है। यहाँ पर देवी के भारवाहक के रूप में यात्रा में शामिल होते हैं।

गैरोली पातल घने जंगलों के बीच पहला बेस कैंप है, बेदनी बुग्याल हिमालय के सबसे सुंदर मखमली घास के मैदानों में से एक है। यहाँ पर 'वैतरणी' नाम का एक छोटा कुंड है, जहाँ नंदा की पूजा की जाती है।यह एशिया के सबसे सुंदर घास के मैदानों में से एक है। यहाँ 'वेदनी कुंड' में स्नान और तर्पण किया जाता है। यहाँ ब्रह्मकमल के फूलों से देवी का अभिषेक होता है, यहाँ पर त्रिशूल और नंदा घुंघटी जैसी ऊंची चोटियों का अद्भुत नज़ारा दिखता है। पातर नचौनियां (पत्थर का नाच) यह स्थान रूपकुंड से थोड़ा पहले आता है। यहाँ तीन अजीब से पत्थर खड़े है।कहा जाता है कि कन्नौज के राजा जशधवल जब अपनी रानी और नर्तकियों के साथ इस पवित्र यात्रा पर आए थे, तो नियमों का उल्लंघन करने (नाच-गाने) के कारण माता नंदा के क्रोध से वे नर्तक पत्थर बन गए रूपकुंड (रहस्यमयी झील) समुद्र तल से लगभग 16,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह एक बर्फीली झील है। बगुआवासा पथरीला रास्ता है और अत्यधिक ठंडा है। यहाँ रात गुजारना चुनौतीपूर्ण होता है।: इसे 'रहस्यमयी झील' कहा जाता है क्योंकि यहाँ आज भी नरकंकाल मिलते हैं। ये कंकाल राजा यशोधवल के सैन्य दल और नर्तकियों के हो सकते हैं जो भीषण बर्फीले तूफ़ान में मारे गए थे। होमकुंड पहुँचकर जब पूजा संपन्न होती है, तो खाडू के पीठ पर सजी हुई पोटली (जिसमें देवी का श्रृंगार होता है) बांध दी जाती है। यहाँ से मेढ़ा इंसानों को छोड़कर अकेले बर्फीले पहाड़ों पर गायब हो जाता है। हज़ारों लोग वहीं रुककर उसे तब तक देखते हैं जब तक वह आँखों से ओझल न हो जाए। वह दृश्य इतना भावुक होता है कि वहां मौजूद हर शख्स की आँखों में आँसू होते हैं, जैसे कोई अपनी सगी बहन को ससुराल विदा कर रहा हो। लोग मानते हैं कि वह सीधे कैलाश पर्वत पहुँचता है।

रुद्रप्रयाग जिले के ब्लाक ऊखीमठ में बाबा केदारनाथ घाटी के गाँव अंदरवाडी,देवशाल, रविग्राम में हर तीन साल में मार्च महीने में 16 दिनों तक माँ कुलदेवी 'नंदा' का स्वरूप बीं माता के जागर (लोक गीत) गाए जाते है माँ के दर्शन करने के लिए गाँव की धियाणीयां (शादीशुदा बेटी) अपने मायके आती हैं| माँ कुलदेवी 'नंदा' का स्वरूप बीं माता का 16 दिनों के बाद श्रृंगार किया जाता है उसके बाद ससुराल(शिव मन्दिर) के लिए उन्हें विदाई देते है,माँ भक्तों को आशीर्वाद देती है भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है जो कि हरियाली प्रसाद के रूप में दिया जाता है।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन-2025: एक परिचय

ज्योति रानी समाद्दार
कनिष्ठ अनुवादक

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन-2025 को आधिकारिक रूप से पाँचवाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन कहा गया, जिसका आयोजन हिन्दी दिवस-2025 के अवसर पर 14 और 15 सितंबर 2025 को महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्जीबिशन सेंटर, गांधीनगर (गुजरात) में किया गया। इसका आयोजन भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी और भारत की अन्य भाषाओं के बीच सामंजस्य, एकता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा राजभाषा हिन्दी का संवर्धन था।

गांधीनगर, जो गुजरात की राजधानी है, इस कार्यक्रम के लिए एक प्रेरणादायक स्थल रहा। सम्मेलन का आयोजन उस भावना को लेकर किया गया कि हिन्दी केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय एकता, प्रशासनिक संवाद, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक सौहार्द का प्रतीक है।

सम्मेलन का उद्देश्य

सम्मेलन के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्न्वत्त रहे:-

1. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं पर विचार-विमर्श करना।
2. राजभाषा को प्रशासन, विज्ञान, शिक्षा, न्याय और तकनीक में अधिक प्रभावी बनाना।
3. भाषा सीखने, उपयोग और अनुवाद में नवीन तकनीकों का समावेश।
4. भारत में भाषाई एकता, विविधता तथा सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा देना।

सम्मेलन में इस बात को भी प्रोत्साहन दिया गया कि भाषा का विकास केवल साहित्यिक या सांस्कृतिक दायरे तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भाषा की उपयोगिता को बढ़ावा देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर नई विकसित की गई "सारथी अनुवाद प्रणाली" जैसी तकनीकी पहल का उद्घाटन भी इसी उद्देश्य से किया गया।

सम्मेलन में उपस्थित मुख्य अतिथि, उद्घाटन और प्रमुख वक्तव्य

सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने समारोह का उद्घाटन किया और इसे संबोधित किया। समारोह में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री अरुण राम मेघवाल तथा गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार भी उपस्थित रहे।

मुख्य भाषण में केंद्रीय गृह मंत्री ने निम्न बातों को बड़े ही प्रभावी ढंग से दर्शकों के मध्य रखा :

- हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में कोई संघर्ष नहीं, बल्कि सहयोग होना चाहिए। परस्पर सहयोग की भावना से ही राजभाषा का विकास संभव है।
- हिन्दी को केवल बोलचाल या प्रशासन की भाषा के रूप में न देखें, बल्कि इसे विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, न्याय और पुलिसिंग जैसी उच्च-स्तरीय क्षेत्रों में विकसित करना चाहिए।
- भारतीयों को अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए और बच्चों को मातृभाषा सीखने तथा उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे हमारी संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों को भी इसी रूप में प्रदान किया जा सके।
- हिन्दी शब्दसिंधु जैसे शब्दकोश पहल के माध्यम से हिन्दी के शब्दकोष का विस्तार तेज़ी से जारी है, और आशा है कि 2029 तक यह दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोष बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जायेगा।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि सारथी अनुवाद प्रणाली जैसे नए उपकरणों का उपयोग हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करेगा, जिससे सरकारी और सामाजिक संचार अधिक प्रभावी बनेगा।

सम्मेलन की आयोजन संरचना और भागीदारी

सम्मेलन दो दिवसीय कार्यक्रम था जिसमें संपूर्ण भारत से सरकारी विभागों के प्रतिनिधि, भाषा विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, शोधकर्ता और छात्रों ने भाग लिया। अनुमान के अनुसार 7,000 से अधिक हिंदी प्रेमियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की, जिससे यह आयोजन देश के विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच चर्चा का विषय बना |

कार्यक्रम के दौरान कई सत्र आयोजित किए गए, जिससे दर्शकगण लाभान्वित हुए :

- भाषाई विविधता पर विभिन्न पैनलों द्वारा विचार-विमर्श।
- तकनीकी अनुवाद उपकरणों की प्रस्तुतियाँ।
- भाषाई शिक्षण और साहित्यिक रचनाओं पर संगोष्ठियों के विषय को भी चर्चा में शामिल किया गया।
- राजभाषा नीति-निर्माण पर विचार-विमर्श किया गया।

दिव्यांग बच्चों के लिए ए.आई. मेटा ग्लासेस: तकनीक के माध्यम से सशक्तिकरण

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन-2025 की एक अत्यंत प्रेरणादायक और मानवीय पहल दिव्यांग बच्चों को ए.आई. आधारित मेटा ग्लासेस का वितरण रही। यह पहल इस बात का सशक्त उदाहरण थी कि आधुनिक तकनीक किस प्रकार सामाजिक समावेशन और समान अवसरों का माध्यम बन सकती है। सम्मेलन के दौरान चयनित दिव्यांग बच्चों को विशेष रूप से विकसित ए.आई. मेटा ग्लासेस प्रदान किए गए, जिनका उद्देश्य उनकी दैनिक गतिविधियों, शिक्षा और आत्मनिर्भरता को सशक्त बनाना था।

ए.आई. मेटा ग्लासेस कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) पर आधारित ऐसे स्मार्ट उपकरण हैं, जो दृष्टिबाधित एवं अन्य दिव्यांग बच्चों को देखने, पहचानने, समझने और संवाद करने में सहायता करते हैं। इन चश्मों में लगे कैमरा, सेंसर और ए.आई. सॉफ्टवेयर आसपास की वस्तुओं, चेहरों, पाठ्य सामग्री और संकेतों को पहचानकर ऑडियो फीडबैक के माध्यम से बच्चों तक जानकारी पहुँचाते हैं। इससे बच्चों को पढ़ाई, चलने-फिरने और सामाजिक संपर्क में विशेष मदद मिलती है।

सम्मेलन में इस पहल का उद्देश्य केवल तकनीकी प्रदर्शन नहीं था, बल्कि यह संदेश देना था कि तकनीक का वास्तविक उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक सशक्तिकरण पहुँचाना है। दिव्यांग बच्चों को मेटा ग्लासेस प्रदान कर यह स्पष्ट किया गया कि सरकार और समाज मिलकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।इस अवसर पर वक्ताओं ने यह भी कहा कि जब भाषा, शिक्षा और तकनीक एक साथ आती हैं, तो वे दिव्यांग बच्चों के लिए नए अवसरों के द्वार खोलती हैं। ए.आई. मेटा ग्लासेस न केवल उनकी सीखने की गति को बढ़ाते हैं, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की भावना भी विकसित करते हैं।

यह पहल सम्मेलन की उस व्यापक सोच को दर्शाती है, जिसके अंतर्गत डिजिटल इंडिया, समावेशी विकास और मानव-केंद्रित तकनीक को प्राथमिकता दी गई। दिव्यांग बच्चों के चेहरे पर आई मुस्कान और उनके अभिभावकों की संतुष्टि इस बात का प्रमाण थी कि तकनीक यदि सही दिशा में उपयोग की जाए, तो वह सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन सकती है।

इस प्रकार, अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन-2025 न केवल भाषा और राजभाषा के संवर्धन का मंच बना, बल्कि यह आयोजन संवेदनशीलता, समावेशन और तकनीकी नवाचार का भी प्रतीक सिद्ध हुआ।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन-2025 ने यह स्पष्ट किया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि संपर्क, विकास और राष्ट्रीय एकता का आधार है। सम्मेलन ने सभी भाषाई समुदायों में सम्बंध, साझा अनुभव और नए दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिससे भारतीय भाषाओं की उपयोगिता व्यापक स्तर पर बढ़ सके।

राजभाषा सम्मलेन में प्रतिभाग हेतु नामांकन के लिए कृतज्ञता

राजभाषा हिन्दी के संवर्धन और कार्यान्वयन की दिशा में आयोजित विभिन्न राजभाषा सम्मेलनों में प्रतिभाग हेतु वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किया गया नामांकन मेरे लिए अत्यंत गौरव और सम्मान का विषय है। यह अवसर न केवल मेरे प्रति उनके विश्वास को दर्शाता है, बल्कि मुझे राजभाषा से संबंधित नीतियों, नवाचारों एवं व्यव्हारिक अनुभवों को निकट से समझने का बहुमूल्य अवसर भी प्रदान करता है। इन सम्मेलनों के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को अधिक प्रभावी बनाने, कार्यालयीन कार्यों में इसके व्यवहारिक पक्षों को सुदृढ़ करने तथा अन्य संस्थानों के श्रेष्ठ अनुभवों से सीखने का अवसर प्राप्त होता है। ऐसे मंचों पर सहभागिता से वैचारिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है और कार्यदक्षता में भी सकारात्मक वृद्धि होती है।

अपने वर्गाधिकारियों के मार्गदर्शन, सहयोग और प्रोत्साहन के बिना यह संभव नहीं हो पाता। उनके द्वारा प्रदत्त यह अवसर मेरे लिए एक प्रेरणा है कि मैं भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार में और अधिक सक्रिय भूमिका निभाऊं तथा सौपें गए दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ करूँ।

अंततः, विभिन्न राजभाषा सम्मेलनों में प्रतिभागिता हेतु नामित किये जाने के लिए मैं अपने वर्गाधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ और आशा करती हूँ कि उनके विश्वास पर खरा उतरते हुए राजभाषा हिन्दी की प्रगति में सकारात्मक योगदान दे सकूँगी।

गीत

दीपक उज्जवल
आं.प्र.सं

मैं ये नहीं कहता कि प्यार मत करो,
पर किसी अजनबी का ऐंतबार मत करो।
अगर करना है प्यार तो वतन से करो,
मरना पड़े कभी तो वतन के लिए मरो,
जो हो गये शहीद इस धरती माँ के लिए,
उन वीरों को शत-शत नमन तुम करो.......................
कुर्बानी-कुर्बानी दी है सदा, यहाँ वीरों ने-यहाँ वीरों ने।
हमने देश को चाहा देश से प्यार किया,
लुटा दिया है सब कुछ इसपे वार दिया।

धरती माता अपनी जननी माते है,
लगा तिलक माथे पर कसमें खाते हैं।
जो भी माँ तुझपे आँख उठाये,
कसम है तेरी माँ वो बच ना पाए।
कुर्बानी-कुर्बानी दी है सदा यहाँ वीरों ने-यहाँ वीरों ने।
कुर्बानी देकर वीरों ने देश आजाद कराया,
उन्हें याद रखना कहीं भूल न जाना।
कुर्बानी-कुर्बानी दी है सदा यहाँ वीरों ने-यहाँ वीरों ने।

भारत माता की जय। जय हिन्द जय भारत।

नन्ही सी जान:- गौरैया

अरविन्द सिंह रावत
लेखाकार

नन्ही सी जान का ढेर सारा शोर। है रहता चारों ओर।।

फुदक-फुदक कर आती है। प्यारा सा राग सुनाती है।।

तिनका-तिनका ला कर। अपना घरौंदा बनाती है।।

है छोटा-सा संसार इसका। मेरे घर पर अधिकार इसका।।

कभी मुडेरी पर, कभी खिड़की पर आती है। इस तरह मेरे घर पर रोज दस्तक देके जाती है।।

अब कम दिखाई देती है ये चिड़िया। जाने कहां चली गई वो चिड़िया।।

आओ फिर से डालें दाना। फिर से लौटाएं इसका चहचहाना।।

ना जानें कहां गई वो प्यारी-सी गौरैया। आओ मिलकर ढूंढे वह प्यारी सी चिड़िया।।

"भारतीय एकता का लक्ष्य का साधन हिन्दी भाषा का प्रचार है।"

- टी माधवराव

नारी

शिवम लिल्हौरी
लेखाकार

इतिहास गवाह है कि इस जहाँ में
जहां-जहां भी आक्रमण हुआ है
तो एक दंभी पुरुष उठा है
अकारण सब तहस-नहस करने को
इज्जत आबरू लूट लेने को
चारों तरफ हाहाकार मचाने को
जलती चिताएं, रोती विधवाएं
मासूम बच्चों को मार कुचलने को

इतिहास इस बात का भी गवाह है
कभी कोई नारी नहीं आई आक्रमण करने
कभी कोई नारी साथ नहीं लाया आक्रमण करने
अगर नारियाँ आतीं, तो अपने साथ लातीं
करुणा, दया, प्रेम, ममता और एक भाव
एक भाव जो सब कुछ बचा लेता
एक भाव जो सब कुछ सहज के रखता
एक भाव जो इंसा की नजर से इंसान को देखता
एक भाव जो कहता पुरुषों के द्वंद्व में
औरतें और बच्चे क्यूँ पिसेंगे ?

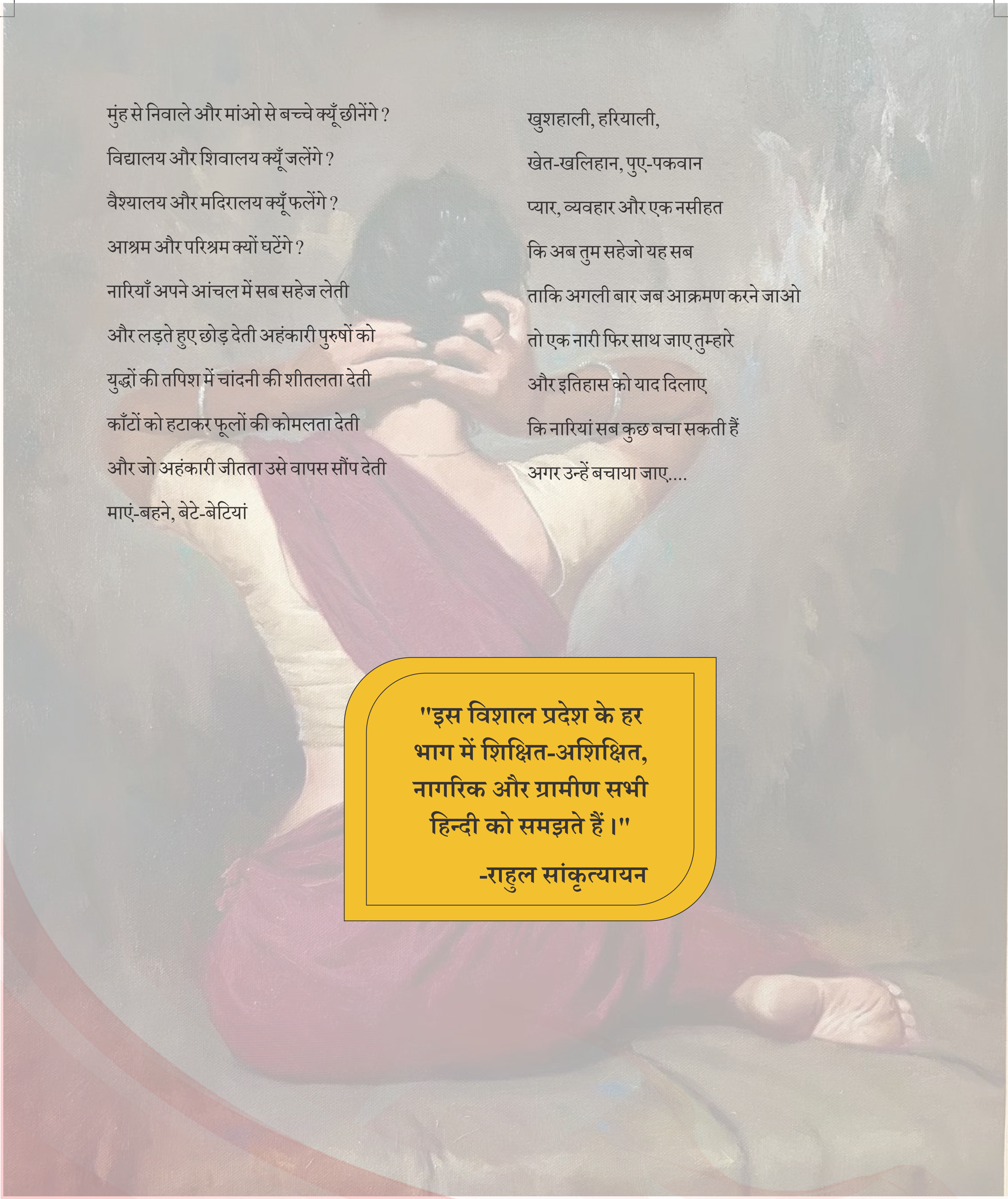

मुंह से निवाले और मांओ से बच्चे क्यूँ छीनेंगे ?
विद्यालय और शिवालय क्यूँ जलेंगे ?
वैश्यालय और मदिरालय क्यूँ फलेंगे ?
आश्रम और परिश्रम क्यों घटेंगे ?
नारियाँ अपने आंचल में सब सहेज लेती
और लड़ते हुए छोड़ देती अहंकारी पुरुषों को
युद्धों की तपिश में चांदनी की शीतलता देती
काँटों को हटाकर फूलों की कोमलता देती
और जो अहंकारी जीतता उसे वापस सौंप देती
माएं-बहने, बेटे-बेटियां
खुशहाली, हरियाली,
खेत-खलिहान, पुए-पकवान
प्यार, व्यवहार और एक नसीहत
कि अब तुम सहेजो यह सब
ताकि अगली बार जब आक्रमण करने जाओ
तो एक नारी फिर साथ जाए तुम्हारे
और इतिहास को याद दिलाए
कि नारियां सब कुछ बचा सकती हैं
अगर उन्हें बचाया जाए....

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं।"

-राहुल सांकृत्यायन

हिमालय की गोद में: मेरी एक रूहानी यात्रा

मयंक मथेला
लेखाकार

(खटीमा से खालिया टॉप और कुमाऊँ के रास्तों की कुछ यादें)

काफी दिनों से शहर के शोर और रोज़मर्रा की भागदौड़ के बीच मन कहीं भीतर ही भीतर पहाड़ों को पुकार रहा था। कहते हैं न, जब पहाड़ बुलाते हैं तो ज़्यादा देर रुका नहीं जाता। बस, एक सुबह बैग उठाया और खटीमा से निकल पड़ा एक ऐसे सफ़र पर, जिसने मेरी सोच और मेरी रूह—दोनों को बदल दिया। यह सफ़र सिर्फ सड़कों का नहीं था—खटीमा से टनकपुर, चम्पावत, पिथौरागढ़, मुनस्यारी और फिर नैनीताल तक—यह खुद से मिलने का एक रास्ता बन गया।

जब मैदान पीछे छूटे और पहाड़ गले मिले:-

शुरुआत खटीमा की उस हल्की सुबह की ठंड से हुई। चकरपुर और बनबसा के खेतों की हरियाली देखते हुए जब गाड़ी टनकपुर से ऊपर चम्पावत की ओर मुड़ी, तो हवा का मिजाज ही बदल गया। घुमावदार रास्ते, देवदार की खुशबू और चीड़ के जंगलों से छनती धूप—ऐसा लगा जैसे प्रकृति खुद मेरा स्वागत कर रही हो। चम्पावत और पिथौरागढ़ की ऊँचाइयों से जब बादलों में लिपटी चोटियाँ दिखीं, तो महसूस हुआ कि दुनिया कितनी विशाल और खूबसूरत है।

मुनस्यारी: जहाँ पंचाचूली से आँखें मिलीं:-

मुनस्यारी पहुँचना जैसे किसी सपने का सच होना था। गाड़ी रुकी और सामने पंचाचूली की बर्फीली चोटियाँ खड़ी थीं—इतनी पास कि लगा हाथ बढ़ाऊँ तो छू लूँ। रास्ते की सारी थकान उस एक नज़ारे ने धो दी। ठंडी हवा मानो कानों में फुसफुसा रही हो—"घर पहुँच गए हो।"

खालिया टॉप: 3750 मीटर पर खुद से मुलाकात:-

अगले दिन लक्ष्य था खालिया टॉप। घने जंगलों के बीच पगडंडियों पर चलते हुए जब एक बोर्ड दिखा—Forest Therapy (Shinrin-yoku)—तो बात सीधे दिल तक उतर गई। हर कदम के साथ शहर का तनाव पीछे छूटता गया।

3750 मीटर पर ज़ीरो पॉइंट पहुँचकर साँसें जैसे ठहर गईं। सामने हिमालय का विराट रूप, नीचे बादलों का समंदर...

वहाँ खड़े होकर लगा—हम कितने छोटे हैं और यह कुदरत कितनी महान। जैसे हर नदी अंत में समंदर से मिल जाती है, वैसे ही मुझे लगा कि मेरी सारी भागदौड़ इसी सुकून की तलाश में थी। वहाँ मैं सिर्फ प्रकृति के करीब नहीं था, मैं खुद के सबसे करीब था।

बिर्थी की फुहारें और अल्मोड़ा की मिठास:-

वापसी में बिर्थी वॉटरफॉल के पास रुकना एक जादुई अनुभव था। ऊँचाई से गिरते उस दूधिया पानी की बौछारें जब चेहरे पर पड़ीं, तो लगा जैसे सब कुछ शुद्ध हो गया हो। वहीं, पेड़ों के बीच लगा एक हरा सा बोर्ड मेरी नज़र में ठहर गया, जिस पर लिखा था—

"Waterfalls wouldn't sound so melodious if there were no rocks in their way." – R. Gaurtam

मैं देर तक उस वाक्य और झरने को एक साथ देखता रहा। तब समझ आया कि ये चट्टानें सिर्फ पानी का रास्ता नहीं रोकतीं, बल्कि उसी बहाव को संगीत देती हैं। शायद हमारी ज़िंदगी भी कुछ ऐसी ही है—अगर रास्ते में मुश्किलें न हों, तो बहाव तो होगा, पर वह मिठास नहीं होगी जो रूह तक उतर जाए। वहीं लिखा एक और वाक्य भी जैसे इस सोच पर मुहर लगा गया—

"If you truly love nature, you will find beauty everywhere."

इसके बाद पड़ाव आया अल्मोड़ा। वहाँ की गलियों में घूमना और विश्व प्रसिद्ध बाल मिठाई का वो डिब्बा खरीदना... वो मिठास सिर्फ ज़ुबान तक नहीं रही, वो इस पूरे सफ़र की यादों में घुल गई।

तालों में ताल: नैनीताल से नौकुचियाताल तक:-

सफ़र के आख़िरी हिस्से में नैनीताल की रौनक और फिर भीमताल-नौकुचियाताल की शांति मिली। नौकुचियाताल में नाव चलाते हुए जब पानी पर पहाड़ों की परछाइयाँ काँप रही थीं, तो एक गहरी खामोशी महसूस हुई— वह खामोशी जो डराती नहीं, बल्कि सुकून देती है। लगा जैसे समय थम गया हो।

विदा लेते हुए...:-

हल्द्वानी होते हुए जब वापस खटीमा पहुँचा, तो मैं वही इंसान नहीं था जो कुछ दिन पहले गया था। मोबाइल तस्वीरों से भरा था और दिल यादों से। यह यात्रा सिर्फ घूमना नहीं थी—यह बिर्थी की फुहारों, खालिया टॉप की बर्फ़ीली हवा और नौकुचियाताल की शांत शाम को जीने का अनुभव था। हिमालय ने मुझे फिर से जीना सिखा दिया।

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।"

-कृष्णस्वामी अय्यर

पल भर का ठहराव

मुकुल चौहान
लेखाकार

गर कभी कहीं पर राहों में किसी मोड़ पे हम जो मिल जाएँ,
मुरझाने वाले फूल सभी, तेरे आने से जो खिल जाएँ,
कोई मुलाकात जो हमारी हो, तो बस पल भर को रुक जाना,
गर तुझको पुकारे लब मेरे, तो बस पल भर को रुक जाना..
गर किसी काम की व्यस्तता में, तुम्हें न मेरी याद आये,
जो भूल से भी भूलो मुझको, कोई और तुम्हें फिर मिल जाए,
फिर मेरे शहर में ही आना, और कहीं दो हम टकरा जाएँ,
तेरी नज़र रुके मेरे चेहरे पर, तो बस पल भर को रुक जाना..
गर तुझको पुकारे लब मेरे, तो बस पल भर को रुक जाना..
गर लगे सुहाना सा मौसम, बादलों की घटाएँ छा जाएँ,
गर चले हवाएँ ज़ोरों की और बूँदें मद्धम आ जाएँ,
गर तुझको पुकारे दिल मेरा और हर आवाज़ में सुन पाऊँ,
एहसास मेरे होने का हो, तो बस पल भर को रुक जाना..
गर तुझको पुकारे लब मेरे, तो बस पल भर को रुक जाना..
चूम जाए शूल मेरे पाँव में, तेरी राहों में फूल खिले,
मैं चाहूँ हर पल इतना, तेरे दर्द सभी मुझको ही मिले,
जैसे ही दिखे तेरा चेहरा, मुस्कान मेरे होंठों पे खिले,
गर आँसू आँखों से निकले, तो बस पल भर को रुक जाना..
गर तुझको पुकारे लब मेरे, तो बस पल भर को रुक जाना..
तेरे जाने से मेरी जान निकले, तो बस पल भर को रुक जाना,
तो बस पल भर को रुक जाना....

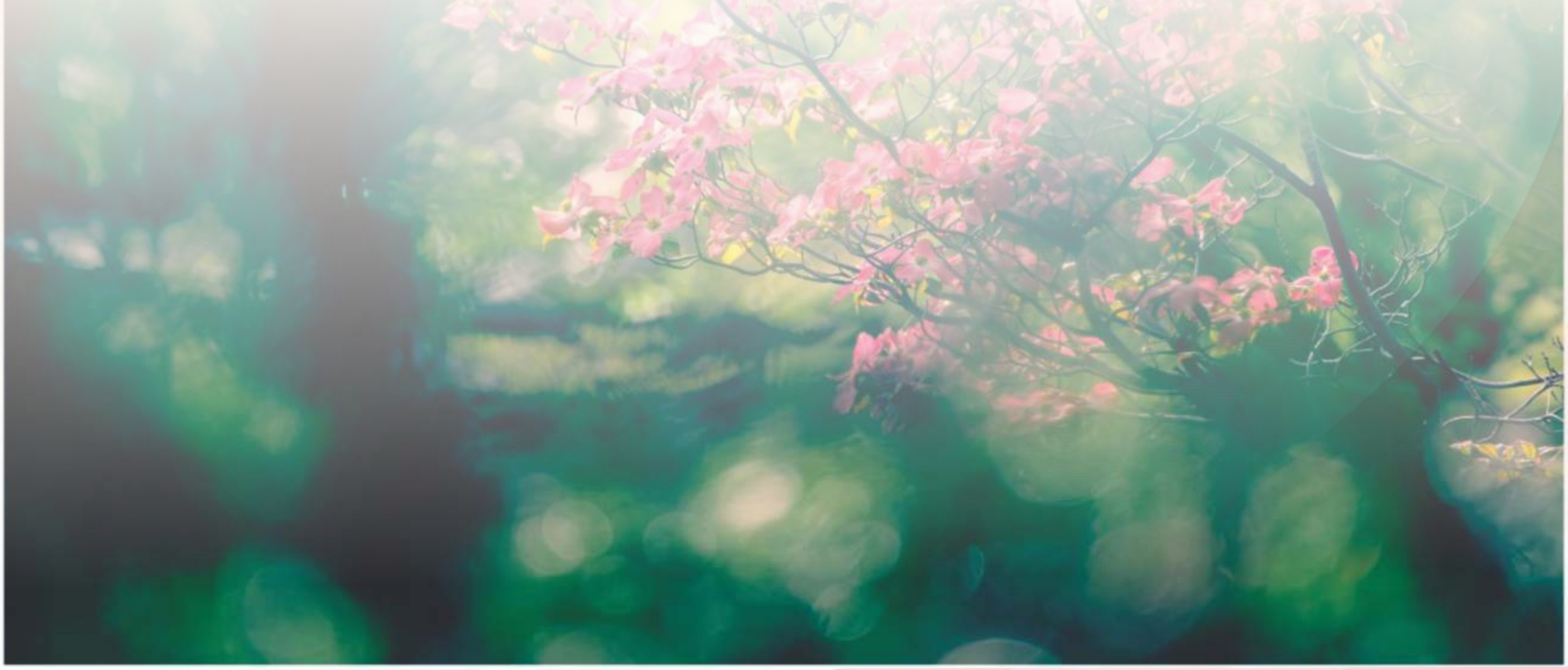

अंतिम महीने के अंतिम दिन

प्रिया गुप्ता
पत्नी श्री मुकुल चौहान, लेखाकार

साल के अंतिम महीने के ये कुछ अंतिम से दिन,
बीत जाएंगे ये शायद, इस बरस भी तेरे बिन।
काटना मुश्किल बड़ा है, है बड़ी लम्बी ये रातें,
जो छुपाई हैं हृदय में, मैं कहूँ किससे वो बातें?
नैनों से धारा बहेगी, पर अदृश्य वो रहेगी,
दर्द दिल को जो मिलेगा, ना ज़ुबाँ उसको कहेगी।
सर्द रातों में तुम्हारी यादों की गरमाहटें,
दिल दुखा जाएँगी फिर से, वो तुम्हारी आहटें।
नैन तकते ही रहेंगे, द्वार को पल-पल निरंतर,
क्या ख़बर? तुम आओगे या, बाट में बीतेगा दिसंबर...

> **"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"**
>
> **- वाल्टर चेनिंग**

भूटान- यात्रा वृत्तान्त

अंकित भट्ट
लेखाकार

भूटान, हिमालय की गोद में बसा एक छोटा-सा देश, मानचित्र पर भले ही सूक्ष्म दिखाई पड़ता हो, लेकिन इसका अनुभव विशाल है। इसे केवल एक पर्यटन स्थल कहना शायद इसके साथ अन्याय होगा, क्योंकि भूटान एक देश से अधिक एक विचार है। यह वह देश है जहाँ विकास को ऊँची इमारतों या तेज़ रफ्तार से नहीं, बल्कि आम जन की खुशहाली से मापा जाता है। यहाँ "खुशी" कोई अमूर्त शब्द नहीं, बल्कि नीति और जीवन-दर्शन का आधार है। बौद्ध परंपराओं में रचा-बसा यह देश प्रकृति, संस्कृति और आधुनिकता को साथ लेकर चलने की कोशिश करता है।

भारत की सीमा पार करना केवल एक देश से दूसरे देश में प्रवेश करना नहीं था, बल्कि एक अलग संसार में कदम रखना था। भूटान की ओर कदम रखते ही वही कंक्रीट की सड़कें, ना जाने क्यूँ इतनी सुंदर लग रही थी। शायद आसपास की पारंपरिक भूटानी वास्तुकला का प्रभाव था, या फिर सदियों से भूटान की संरक्षित प्राकृतिक विरासत। कारण जो भी रहा हो, इतना तय था कि उस पहले ही क्षण में भूटान ने मुझे पूरी तरह अपने भीतर खींच लिया था। मैं, जो सामान्यतः तस्वीरें लेने से बचता हूँ, खुद रुकते हुए, फोन निकालते हुए एक साधारण-सी तस्वीर लेते हुए पा रहा था। वह कोई प्रसिद्ध स्थल नहीं था, फिर भी उसे देखे बिना आगे बढ़ पाना संभव नहीं था।

पहला शहर, फुएंत्शोलिंग, इस बदलाव की सबसे स्पष्ट झलक देता है। सड़कें चौड़ी, साफ़ और बेहद अच्छी तरह रख-रखाव वाली दिखाई पड़ती हैं। पहाड़ों के बीच भी अनुशासन और योजना साफ़ दिखाई देती है। ऐसा लगता है मानो सीमा के उस पार समय ने अपनी चाल बदल ली हो। इमिग्रेशन केंद्र पर ही यह समझ आ जाता है कि यहाँ कामकाज की ज़िम्मेदारी अधिकतर महिलाएँ संभालती हैं। बिना किसी घोषणा के भूटान एक महिला-प्रधान समाज का आभास देता है। यहीं हमारी मुलाक़ात हमारे गाइड निमा से हुई, जिनका स्वागत भूटानी संस्कृति की तरह ही सादा था—कम शब्द, अधिक विनम्रता।

भूटान में यात्रा को और भी सहज बनाती है, इसकी मुद्रा व्यवस्था। यहाँ की आधिकारिक मुद्रा भारतीय रुपये के साथ एक-से-एक अनुपात पर चलती है। भारतीय नोट आसानी से स्वीकार किए जाते हैं और आज के समय में UPI भी काम करता है। इस तरह पैसे या नगदी को लेकर कोई उलझन नहीं रहती। राजनीतिक रूप से भी भूटान एक अनोखा संतुलन प्रस्तुत करता है। यह आज भी एक राजशाही है, और राजा के प्रति लोगों का सम्मान किसी औपचारिकता से नहीं, बल्कि भावना से उपजा हुआ लगता है। साथ ही प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल और संसद भी है—परंपरा और लोकतंत्र यहाँ साथ-साथ चलते हैं।

सांस्कृतिक अपनापन हर जगह महसूस होता है। दुकानों और होटलों में टीवी पर भारतीय फ़िल्में और कार्यक्रम चलते दिखाई देते हैं, और इसी कारण यहाँ अधिकांश लोग हिंदी सहजता से बोल लेते हैं। भूटानी लोकगीत, उनकी धुन और भाव इतने परिचित लगे कि भारतीय लोकसंगीत से तुलना अपने-आप होने लगी। स्वर अलग थे, लेकिन भावना कहीं गहराई में एक-सी महसूस होती थी। कहते हैं न - दुनिया वाक़ई बहुत छोटी है, मुझे यह एहसास तब हुआ जब हमारे होटल मालिक ने बताया कि उन्होंने मसूरी और देहरादून में पढ़ाई की है। ऐसे क्षणों में सीमाएँ अर्थहीन लगने लगती हैं।

यात्रा के अगले पड़ाव में हमने फोभजिखा घाटी का रुख किया। दूर तक फैली घास की ज़मीन, हल्के कोहरे में लिपटे पहाड़, घास चरते हुए स्थानीय पशु, प्रवासी पक्षी, इस सब के बीच सुंदर घर ओर उनके बीचों बीच बहती छोटी जलधाराएँ। यहाँ खड़े होकर ऐसा लगता है जैसे प्रकृति स्वयं ध्यान में बैठी हो। ये जगह किसी चित्रकार की कल्पना से कम नहीं लगती।

राजधानी थिम्पू आधुनिकता और परंपरा का सुंदर संगम है। यह शायद दुनिया की एकमात्र राजधानी है जहाँ ट्रैफिक लाइट नहीं है। शहर के ऊपर स्थित विशाल बुद्ध प्रतिमा पूरी घाटी को शांत दृष्टि से निहारती हुई प्रतीत होती है। पुनाखा ज़ोंग, दो नदियों के संगम पर स्थित, इतिहास, धर्म और स्थापत्य का भव्य उदाहरण है। दोचुला पास के 108 स्तूप और साफ़ मौसम में दिखाई देती हिमालय की चोटियाँ भूटान को मन में स्थायी रूप से अंकित कर देती हैं। हर प्रमुख स्थल पर प्रवेश शुल्क और नियम हैं, पर यह बोझ नहीं लगता—यह समझ में आता है कि भूटान अपने सौंदर्य का व्यापार करता है ,न कि किसी तरह का समझौता।

राजधानी थिंपू में राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा के दौरान भूटान के राष्ट्रीय पशु—टाकिन—को देखने का अवसर भी मिला। पहली नज़र में यह प्राणी किसी कल्पना से निकला हुआ लगता है, जैसे बकरी और बैल के बीच कहीं ठहर गया हो। शांत स्वभाव वाला टाकिन भूटान की आत्मा से मेल खाता प्रतीत होता है। उसे अपने प्राकृतिक परिवेश में सहज देखकर यह साफ़ महसूस हुआ कि भूटान अपने प्रतीकों को केवल सम्मान नहीं देता, उन्हें संरक्षित भी करता है।

भूटान को समझने में उसके भोजन और शिल्पकला की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। यहाँ का राष्ट्रीय व्यंजन है- एमा दात्शी। इसमें मिर्च को मसाले की तरह नहीं, बल्कि मुख्य सब्ज़ी की तरह इस्तेमाल किया जाता है और उसे स्थानीय चीज़ के साथ पकाया जाता है। पहले इसका तीखापन चौंकाता जरूर है, लेकिन धीरे-धीरे वही स्वाद आपकी जुबान को लग जाता है। इसके साथ परोसा जाने वाला स्थानीय लाल चावल अपने हल्के मेवे-जैसे स्वाद के कारण अलग पहचान रखता है। ठंड में पी जाने वाली सूजा — मक्खन वाली नमकीन चाय — यहाँ की खासियत है। भूटान अपनी विशिष्ट मंडला कला के लिए भी प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त बाज़ारों में मिलने वाले प्रसिद्ध बेबी याक की ऊन से बने शॉल भी ध्यान खींचते हैं—बेहद मुलायम, हल्के और गर्म।

अपने इस सफर के आखिरी पड़ाव में हमने टाइगर नेस्ट मठ की यात्रा की और वही पूरी यात्रा का सबसे प्रभावशाली हिस्सा भी रहा। इस मठ तक पहुँचने वाला रास्ता केवल शारीरिक चुनौती नहीं था, वह भावनात्मक भी था। रास्ते में भारत और विदेशों से आए यात्रियों से बातचीत हुई—अलग देश, अलग भाषाएँ, पर एक सा उत्साह। इसी चढ़ाई के दौरान हमारे गाइड निमा ने भी अपने भाव खुलकर हमें बताए। उन्होंने कहा कि हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती। भूटान भी अपनी समस्याओं से जूझ रहा है—भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी और युवाओं में बढ़ती निराशा यहाँ भी मौजूद है। शिक्षा और स्वास्थ्य निःशुल्क तो हैं, पर उनकी गुणवत्ता हमेशा आदर्श नहीं है। ये सब न शिकायत थी, न उनकी बातों में कोई कटुता थी—बस एक ईमानदार सच्चाई।

और जब अंततः मठ सामने दिखाई दिया- ऊँची चट्टान से चिपका, आकाश के बेहद क़रीब- तो वह केवल एक दृश्य मात्र नहीं था, वह उस पूरी यात्रा का भी उत्तर था। हमारी यात्रा औपचारिक रूप से तो यहाँ समाप्त हुई, लेकिन मैं निस्संदेह कह सकता हूँ कि जो भी भूटान देश का भ्रमण करेगा, वह इसकी सुंदरता, गहरी आध्यात्मिकता और विशिष्ट पहचान से स्वयं को अछूता नहीं रख पाएगा। मेरे लिए यह यात्रा केवल एक अनुभव नहीं, बल्कि एक ऐसी अनुभूति बन गई है जिसने मन और आत्मा पर अमिट छाप छोड़ दी है।

"राष्ट्रभाषा हिन्दी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।"

-अंनत गोपाल शेवड़े

मैं और वो

शिवम सिंह
खण्डीय लेखाधिकारी

यहाँ मैं जिंदगी की दौड़ में बेतहाशा दौड़ता हूँ,
और वो कश्मीर की वादियों में फिरता है,
यहाँ मैं जिन्दा रहने की जदोजहद में,
और वो किसी झील में बत्तख संग तिरता है,
मैं यहाँ शोरगुल में आता, जाता, रहता
और वो किसी पेड़ पर बैठ बाँसुरी बजाता है
यहाँ मैं राजनीती झेलता सुनता करता
और वो अकेले पहाड़ों पर गुनगुनाता है
यहाँ मैं जल निगम का क्लोरीनेटेड पानी पीता,
वो झरने से अंजुली में जल भर पीता है,
यहाँ मैं ठेले से खरीदे फल खाता हूँ,
वो बाग़ में पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ खाता है|
यहाँ मैं अलार्म से उठता,
वो मुर्गे की बाग़ से जगता है
मैं घड़ियाँ देख काम करता हूँ
वो काम देख समय तय करता है|
वो मुझसे कितना अलग है,
पर बसता मेरे भीतर है

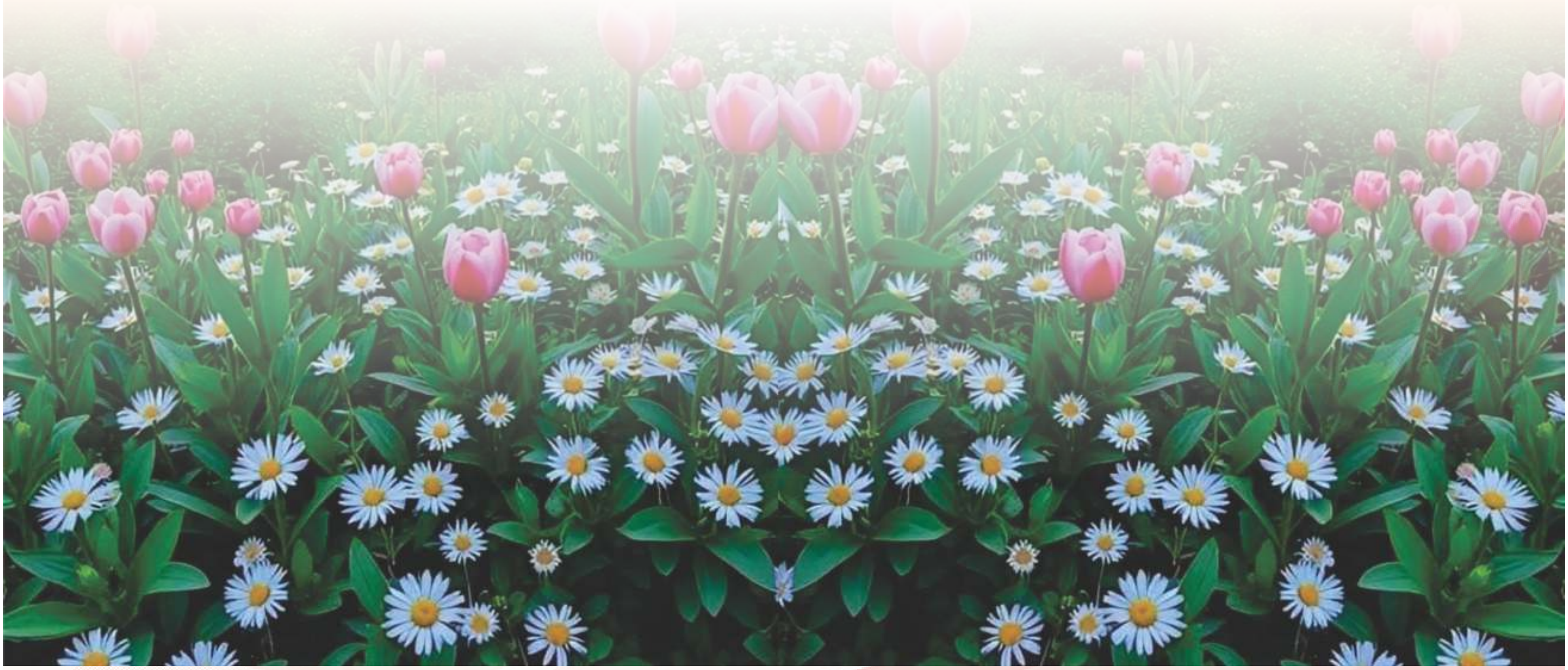

चिड़िया

पूनम शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

खुला आसमान,ऊँचे पहाड़,हवा सर्द सी बहती है,
दूर कहीं उस पेड़ की सबसे ऊँची डाली पर,
एक चिड़िया बैठी रहती है |
न सर्द हवा न कोई जाड़ा, न ऊँचाई से घबराती है,
मगन है अपनी मस्ती में,बेफिक्री से अपना राग सुनाती है |
जिसे देते हम नाम एकाकीपन का,
उसी एकांत में वह पंख फैलाती है |
एकला रहो,एकला चलो की नीति सिखलाती है,
न डरना ऊँचे अंबर से, पर्वतों से,सर्द हवाओं से,
नित नए राग सुनाओ तुम भी,
मत घबराओ,मत सकुचाओ,
चिड़िया की तरह चहचहाओ तुम भी ||

"हिन्दी हिन्द की,
हिंदियों की भाषा है।"
-रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर

जुगनू वाली रात की कहानी

शिवम सिंह
खण्डीय लेखाधिकारी

प्रत्येक कहानी का प्रारब्ध और नियति बस इतनी होती है कि उसे कोई पढ़ने या सुनने वाला मिल जाए। मेरे पास एक कहानी है। चलिए आपको सुनाता हूँ। एक बार की बात है। ठंड के दिनों की एक घनघोर काली रात थी। अचानक मेरी नींद खुली तो रात के दो बज रहे थे। वह भी मुझे तब पता चला, जब मेरे साथ-साथ, सोने की दो-तीन नाकाम कोशिशों के बाद यह जानने की तीव्र इच्छा भी जाग गई कि आखिर सुबह होने में कितना समय शेष है? वैसे करने को बहुत कुछ है पर इंसान रात में सोता है। लेकिन जब रात्रि के मध्य नींद टूट जाए तो फिर से सोने का प्रयत्न करने के सिवाय करने के लिए कुछ नहीं होता। सोने के कई असफल प्रयासों के बाद, अंततः मुझे तंग आकर उठना पड़ा। कुछ देर बैठकर खिड़की के बाहर देखता रहा। नज़र धुँधली थी और दृश्य भी। यह सोने और जगने के मध्य की अवस्था थी। इसी बीच अंतरात्मा से स्ट्रॉन्ग कॉफी का संदेश प्राप्त हुआ। चार-पाँच बार इस संदेश का दमन करने के पश्चात अंततः मैंने बिस्तर तजने में ही भलाई समझी। कम्बल को दी हुई उधार की गर्मी से निकलने के लिए मैं खुद को बड़ी मुश्किल से मना पाया। चंद मिनटों में लबालब मलाईदार कॉफी सामने तैयार थी। मैंने प्लास्टिक की एक कुर्सी गेट के पास लगा ली। काले आसमान के चित्रपट पर चमकीले तारे टिमटिमा रहे थे। कॉफी की चुस्कियों के साथ मैं आसमान में बिखरे तारों को जोड़कर चित्र बनाने की कोशिश करने लगा। इससे ऊबा तो थोड़ी देर बाद कमरे के भीतर से एक अधपढ़ी किताब ले आया। गेट के बाहर सड़क किनारे सटकर खड़े लैंप-पोस्ट की रोशनी में किताब के बचे हुए आखिरी पन्ने पलटने लगा। नींद का दूर-दूर तक कोई नाम-ओ-निशान नहीं था। मैंने सोचा कुछ लिख लिया जाये। चहलकदमी करते हुए बिना चश्मा पहने, आँखों को छोटा-बड़ा कर फोकस बनाते हुए अँधेरे में कॉपी-कलम ढूढ़ी गई। बाहर कुर्सी पर बैठे हुए कुछ टूटी-फूटी पंक्तियाँ जम रही हैं और फिर काट दी जा रही हैं।

शायद कल की बारिश के कारण हवा में हल्की-फुल्की ठंड है। सड़क के उस पार अमरूद के पेड़ पर एक रोड लाइट लगाई गई है। उससे न जाने कौन से रंग की मद्धिम रोशनी निकल रही है। न लाल है, न नारंगी और न ही केसरिया। फिलहाल कोई दिखाई नहीं दे रहा सिवाय एक-दो कुत्तों के। जिन्होनें आस-पास की सिक्यूरिटी का जिम्मा स्वयं ही उठाया हुआ है। ये मेरी आहट से आहत मालूम दे रहे हैं। दिन में तो ये मुझे पहचानते हैं पर रात में पहचानेंगे या नहीं; कहा नहीं जा सकता। कान खड़े किये मेरी ओर घूरे जा रहे हैं। उन्हें आश्वस्त करने के लिए मैं फिर से कुर्सी पर बैठ गया हूँ। उन्होंने मेरे इस कदम का सम्मान किया और अपनी जगह बैठ गए। न जाने क्यों इतनी रात में बैकग्राउंड में एक-दो चिड़ियाँ चहचहा रही हैं। अभी कुछ उड़ता व चमकता जीव एक किनारे से आँखों के सामने गुजरा और रोशनी में जाकर गुम हो गया। सोचा खड़े होकर देखूँ पर सिक्यूरिटी देख हिम्मत न हुई; और इतनी देर में कुर्सी भी थोड़ी गरम तो हो ही गई है।

मैंने वहीं बैठकर इंतज़ार किया... चमकता जीव वापस लौटा। जैसे पहले चमकते हुए गुम हुई थी वैसे ही गुम से निकलकर चमकते हुए आँखों के सामने से टिमटिमाने लगा। बड़े दिन बाद आज एक जुगनू दिखा है। एक वो भी क्या बचपन के दिन थे; जब पूरी अंजुली में जुगनू भरकर माँ को दिखाने जाते थे। वो पहले तो खुश होती फिर अगले ही पल इस कार्य के पीछे की दौड़ भाग तथा अगमनीय स्थानों पर जाने का सोच कर गुस्सा हो चिल्लाती। उनकी बात पूरी होने से पहले ही हम वहाँ से निकल लिया करते थे। जुगनू पकड़कर गिनने के लिए ही मुझे गिनती सीखने की बड़ी चाह थी।

अरे ये लो! देखते ही देखते जुगनू वापस उजाले में खो गया। अँधेरे में खोना तो समझ में आता है पर उजाले में खो जाना। नींद अभी तक नहीं आई पर आँखों में एक खिंचाव सा होने लगा है। हाथ-पैर जरूर ठंडे हो गए। अब तो मान लो कि चार दिन पुराने सर्दी-जुकाम से कम से कम अगले चार दिनों का साथ और बढ़ गया है। वापस कंबल में जाकर लेटा तो मानो पलकें बंद हुई और खुल गई। मात्र एक पल लगा सुबह के दस बजने में।

अगले दिन नींद खुली नहीं बल्कि टूट गई। घड़ी में देखा तो ठीक दो बज रहे थे। बहुत तेज प्यास लग आई थी। एक गिलास गटागट पानी पी गया। शायद कोई सपना था; पर ठीक से कुछ याद नहीं। सर्दी-जुकाम की मात्रा में बीते दिन की अपेक्षा बढ़ोत्तरी हो चुकी थी। वापस सोने के लिए कंबल की शरण में जा रहा था कि मुझे जुगनू याद आ गया। धीरे से दरवाज़ा खोला और बाहर आ गया। फिर से वैसे ही घनघोर काली रात थी। कुत्ते सड़क पर अपना आधिपत्य स्थापित किए हुए थे। कल की कुर्सी वहीं पर पड़ी हुई शायद मेरा इंतज़ार कर रही थी। भीतर से कम्बल ले आया। कंबल से स्वयं को लपेटे हुए मैं कुर्सी पर पैर ऊपर कर आसीन हो गया। हाथ-पैर सब कंबल से ढक लिए गए थे। केवल दो आँखें बाहर थी। नींद के खिंचाव के विपरीत आँखें दाएँ से बाएँ नाच रही थी। जुगनू की प्रतीक्षा जारी थी। पर कल से विलग आज नींद आ रही थी। दिमाग का कहना है कि चलो भीतर सो जाते हैं। पर विद्रोही मन में ख्याल आ रहा था कि जब सब सोएँ तब जागो। जब सभी सो रहे हों तो सो के क्या? अंदर का कीड़ा जो हमेशा काटता रहता है कि बेटे तुम बाकी 'बकलोल' लोगों से अलग हो क्योंकि तुममे हमेशा से कोई बात है, जो आज तक न तुम समझ पाये और न ही यह दुनिया। पर कुछ न कुछ है तो जरूर। और इसी 'कुछ न कुछ' की बात पर जिंदा हो तुम। जिसके कारण अक्सर सामने वाले को यह कह कर टाल देते हो "जाने दो तुम नहीं समझोगे"। क्योंकि इतने सालों में तुम जब खुद ही न समझ पाये तो सामने वाला घंटे भर में क्या घंटा समझेगा।

मैं अपनी बात बताता हूँ। लिखने के नाम पर भले महीने भर में दो पृष्ठ न लिखता होऊँ पर मौका लगा तो साहित्य का नोबेल मिलने का सोच ही लेता हूँ। यदा-कदा जब जोश चढ़ता है तो क्या नए-नए विचार आते हैं! चार-पाँच उच्च स्तरीय कहानियाँ-कविताएँ दिमाग में तेजी से नाचने लगती हैं। दस-पंद्रह मिनट में ऐसा लगने लगता है कि बस अब तो नोबेल कहीं गया नहीं, पर जैसे ही लिखना शुरु किये कि एक-दो पेज बाद ही लगता है कि उतनी भी अच्छी कहानी नहीं है... कुछ और लिखा जाना चाहिए। पर आज अभी इसी क्षण से यह प्रण लिया गया है कि कुछ भी अधूरा नहीं छोड़ा जाएगा। सो इस नियम के तहत सर्वप्रथम कल के अधूरे लिखे को पूरा किया जाना था। अँधेरे में कलम-कॉपी लेकर कुर्सी पर बैठ गया। कहीं दूर से ट्रेन का सायरन सुनाई दे रहा था। हल्की ठंडी हवा रोम छिद्रों को वेधने के लिए प्रयासरत थी। हाथ से अक्षर स्पष्ट रूप से नहीं बन रहे थे। फिर भी लिखाई जारी थी। ज़्यादा देर तक बाहर लिखते न बना तो भीतर बिस्तर पर बैठकर लिखा जाने लगा। न जाने कब नींद का ऐसा झोंका आया कि आँखों में हो रहे हल्के दर्द को अचानक से आराम मिल गया। उस रात की कहानी पूरी मान ली गई। कहानी की एक ख़ास बात होती है वो रुकती नहीं; अच्छी-बुरी जैसी भी हो, समय के साथ बनती-बढ़ती जाती है। और नियति देखिये आखिर में उसे एक पाठक मिल गया।

"शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है।"

-शिवप्रसाद सितारेहिंद

साहस की लहरें- मेरा ऋषिकेश एडवेंचर

प्रभात कुमार द्विवेदी
खंडीय लेखाकार

साहस की लहरें- मेरा ऋषिकेश एडवेंचर

ऋषिकेश की सुबह हमेशा कुछ अलग होती है। हवा में एक पवित्रता है। तो वहीं गंगा की लहरों में एक अनसुनी चुनौती। जब मैं अपनी पहली एडवेंचर ट्रिप के लिए वहाँ पहुँचा। तो दिल में उत्साह कम और धड़कनें ज़्यादा तेज़ थीं। मुझे नहीं पता था कि आने वाले तीन दिन मेरी ज़िंदगी के सबसे साहसी और परिवर्तनकारी दिन होने वाले हैं।

1) बंजी जंपिंग- जब डर ने उड़ान भरी

शिवपुरी में बना एडवेंचर कांप्लेक्स और वहाँ स्थित 89 मीटर ऊँचा प्लेटफॉर्म। नीचे पाताल जैसी गहराई और छोटी सी बहती नदी। जब मैंने उस प्लेटफॉर्म पर कदम रखा तो मेरे पैर काँप रहे थे। इंस्ट्रक्टर ने मेरे पैरों में रस्सियाँ बाँधी और कहा घबराना मत बस सामने पहाड़ों की ओर देखो और कूद जाओ।

वह क्षण जब मैं किनारे पर खड़ा था जीवन का सबसे लंबा क्षण था, जब आप बहुत ऊँचाई पर बिना आधार के होते हैं तो उस समय शरीर में उठने वाली संवेदना को ही डर कहा गया है। 1...2...3 की आवाज़ आई और मैंने छलाँग लगा दी। हवा मेरे चेहरे से टकरा रही थी, गुरुत्वाकर्षण अपना कार्य कर रहा था मैं तेजी से नीचे जा रहा था। कुछ सेकंड के लिए लगा जैसे समय रुक गया है। जब मैं नीचे हवा में झूल रहा था तो डर अचानक शांत हो गया और उसकी जगह एक असीम शांति ने ले ली।

मैंने क्या सीखा

- डर के आगे ही जीत है:- सबसे कठिन कदम वह होता है जब आप किनारे पर खड़े होते हैं। एक बार जब आप छलाँग लगा देते हैं तो डर गायब हो जाता है।

- भरोसे की अहमियत- कभी-कभी आपको अपनी सुरक्षा के लिए इंस्ट्रक्टर्स और तकनीक पर पूरा भरोसा करना पड़ता है।

2) जायंट स्विंग- दो का साथ और हवा का हाथ

बंजी के तुरंत बाद जायंट स्विंग की बारी थी। यह मैंने और मेरे मित्र ने एक साथ की। इसमें आप गिरते नहीं हैं बल्कि एक पेंडुलम की तरह झूलते हैं। जब मुझे ऊँचाई से छोड़ा गया तो वह कर्णभेदी घड़घड़ाहट की आवाज और फ्री फॉल बंजी से भी ज्यादा खतरनाक महसूस हुए। लेकिन जैसे ही स्विंग ने अपनी गति पकड़ी पहाड़ों के बीच से गुज़रती ठंडी हवा ने मुझे एहसास दिलाया कि दुनिया कितनी विशाल और सुंदर है।

मैंने क्या सीखा

- लचीलापन:-जीवन कभी आपको नीचे गिराएगा तो कभी ऊपर ले जाएगा। बस उस फ्लो के साथ बहना सीखें।
- दृष्टिकोण का महत्व:- जब आप हवा में झूल रहे होते हैं तो दुनिया का नज़ारा बदल जाता है। समस्याओं को भी अलग नज़रिए से देखना चाहिए।

रिवर्स बंजी- विपरीत दिशा में उछाल

रिवर्स बंजी का अनुभव बिल्कुल अलग था। इसमें आप नीचे नहीं गिरते बल्कि रॉकेट की तरह आसमान की ओर दागे जाते हैं। जैसे ही लीवर खिंचा मैं पलक झपकते ही बादलों के करीब पहुँच गया। हवा में गोल-गोल घूमते हुए मुझे समझ आया कि ऊपर जाना उतना कठिन नहीं जितना कि ऊपर जाकर नीचे आना ऐसे में धैर्य रखना और अचानक आने वाले झटकों के लिए तैयार रहना ही जीवन है।

मैंने क्या सीखा

- अचानक होने वाले बदलाव:- जीवन में कई बार हमें बिना तैयारी के लॉन्च कर दिया जाता है। उस समय खुद को स्थिर रखना ही कला है।
- नियंत्रण छोड़ना:- जब आप हवा में गोल घूम रहे होते हैं तो आपके पास कोई नियंत्रण नहीं होता। कभी-कभी नियंत्रण छोड़ देना ही बेहतर विकल्प होता है।

रिवर राफ्टिंग- गंगा की गोद में संघर्ष

अगला दिन था गंगा की लहरों से दो-दो हाथ करने का। शिवपुरी से शुरू हुई हमारी राफ्टिंग रोलर कोस्टर और गोल्फ कोर्स जैसे खतरनाक रैपिड्स से होकर गुजरी। जब पानी की बर्फीली लहरें चेहरे पर पड़ती थीं तो सारी थकान मिट जाती थी। चप्पू चलाओ! की आवाज़ पर हम सब एक लय में मेहनत कर रहे थे। बीच में जब बॉडी सर्फिंग की बारी आई तो गंगा की लहरों में तैरते हुए लगा जैसे माँ प्रकृति ने अपनी बाहों में समेट लिया हो।

मैंने क्या सीखा

- टीम वर्क- राफ्टिंग में अकेले कुछ नहीं होता। अगर सब मिलकर चप्पू न चलाएँ तो नाव पलट सकती है।
- प्रकृति का सम्मान- लहरों की ताकत हमें याद दिलाती है कि हम प्रकृति के सामने कितने छोटे हैं इसलिए इसका सम्मान अनिवार्य है।

निष्कर्ष - एक बदला हुआ इंसान

इन चार अनुभवों ने मुझे सिर्फ एड्रिनेलिन ही नहीं दिया बल्कि मुझे अंदर से मज़बूत बनाया। मैंने सीखा कि डर केवल हमारे दिमाग की एक कल्पना है। जब हम उस सीमा को पार करते हैं तो हमें अपनी असली शक्ति का पता चलता है।

ऋषिकेश से लौटते समय मैं वही व्यक्ति नहीं था जो वहाँ गया था। मेरे पास अब यादों का पिटारा था और एक ऐसा आत्मविश्वास जो मुझे जीवन की किसी भी चुनौती से लड़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

विनोद कुमार शर्मा
वरि. लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

भारत एक बहुभाषायी देश है| हिन्दी भाषा या उसका कोई स्वरुप भारत के बहुत बड़े हिस्से में आज संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग होता है, यह वास्तविकता है तथा इसमें किसी को भी तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए| १४ सितम्बर सन १९४९ को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था, लेकिन इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी आज तक हिन्दी पूरे देश की भाषा बनकर राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित क्यों नहीं हो पाई,यह विचारणीय है| आज भी प्रत्येक हिंदी प्रेमी का हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होते हुए देखना एक सपना है| समस्त भारत की संपर्क भाषा हिंदी है, आज ऐसा दावे के साथ कहा जा सकता है क्योंकि हिन्दी भारत के प्रत्येक कोने में अपनी गहरी पैठ बना चुकी है तथा कुछ क्षेत्रों के लोग देर से ही सही लेकिन आज ये स्वीकार करने लगे हैं कि हिन्दी भाषा प्रयोग करने में सुगम एवं सरल है| यह सच्चाई स्वीकार करने में अगर किसी को कठिनाई है तो वें वह लोग हैं जो अंग्रेजी के पीछे भागते हैं तथा अंग्रेजी को ही किसी व्यक्ति की योग्यता का पैमाना समझते है| हिन्दी को आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका, इसके लिए हमारे देश में विशुद्ध राजनीतिक कारणों से हिंदी का विरोध करने वाले दो या तीन राज्य उत्तरदायी नहीं है, अपितु स्वयं हिंदी भाषी क्षेत्रों के लोग उत्तरदायी हैं जो आज तक हिंदी को अपने जीवन में अनिवार्य स्थान प्रदान नहीं कर सके हैं| हिंदी के प्रति जिस अपनत्व की भावना की आवश्यकता है, उसका कहीं न कहीं अभाव दिखाई पड़ता है| हिन्दी क्षेत्रों की ही यदि हम बात करें तो अंग्रेजी शिक्षा का आकर्षण अभिभावकों को खींच रहा है| उच्च शिक्षा एवं रोजगार में अंग्रेजी का महत्त्व बढ़ने से ऐसा अधिकांश अभिभावकों का मानना है, माता-पिता अपने बच्चों का प्रवेश अंग्रेजी स्कूलों में करने को प्राथमिकता दे रहें हैं| हिंदी भाषी क्षेत्रों में ही अंग्रेजी स्कूलों की बाढ़ की आ गई है, इसके कारण हमारी हिन्दी शिक्षा की नींव कमजोर हुई है| इसलिए यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी आज तक लोगों के दिलों में घर नहीं सकी है| जब तक हमारे देश में हिन्दी का प्रयोग आधे अधूरे मन से होता रहेगा, हिंदी के विकास में बाधाएँ आती रहेंगी| सभी जानते हैं कि आज केंद्र सरकार सहित कई राज्यों की आधिकारिक भाषा हिन्दी है| हिन्दी का निरंतर विकास भी हो रहा है| कई संवैधानिक संस्थाओं में भी निश्चित रूप से हिन्दी में कामकाज भी बढ़ा है| आर्थिक एवं चिकित्सा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी हिन्दी अपना स्थान बना चुकी है| इस सबके बावजूद भी अंग्रेजी का दबदबा आज भी कायम है| इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है| ख़ास तौर पर विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में हिन्दी की जड़ें आज भी मजबूत प्रतीत होती हैं | इस मार्ग में जो भी बाधाएँ है उनका समाधान करने के लिए समेकित प्रयास किये जाने की आवश्यकता है|

सरकारी कामकाज में हिन्दी में अधिक कार्य करने वाले अधिकारीयों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए| जहा पर अंग्रेजी में अनावश्यक रूप से कार्य करने की आवश्यकता नहीं है, वहां अंग्रेजी में कार्य क्यों? सरकारी कामकाज में इसे सशक्त तरीके से लागू किया जाना चाहिए| राजभाषा के प्रति उपेक्षा के मामलों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए| हम जब तक आधे-अधूरे मन से हिंदी को अपनायेंगे, हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो पायेगी| हिंदी को पूरे एवं खुले मन से अपनानाने की आवश्यकता है| यदि हम इसके लिए गंभीर प्रयास करते हैं तो हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने का जनमानस का सपना निश्चित रूप से साकार होगा|

मेरी मथुरा यात्रा

राजेश अधिकारी
बाह्यस्रोतकर्मी

मुझे पहली बार मथुरा वृंदावन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ| मेरी पत्नी स्वर्गीय पुष्पा देवी की बहुत ही इच्छा थी मथुरा-वृंदावन जाने की| वो कहती रही चलो मथुरा-वृंदावन घूम के आते है| मैं टाल-मटोल करता रहा फिर कभी जायेंगे अभी समय नहीं है, छुट्टी नहीं मिलेगी ऑफिस से या अभी खर्चा नहीं है| मैं उसको अपनी समस्या बताता रहा और वो अपने मन को शांत करती रही| फिर कुछ समय बाद वो सदा के लिए इस संसार को छोड़कर चली गयी, उनका देहांत हो गया, और मैं उनके बिना अकेला रह गया|

कभी तो लगता था मैं उनको मथुरा वृंदावन क्यों नहीं ले गया मैं ये सब सोचकर बहुत ही उदास हो जाता था| एक दिन मैं घर पर अकेला उदास बैठा था इनकी बहुत याद आ रही थी इनकी फोटो मोबाइल में देखकर मन बहुत ही उदास था| फिर अचानक उसी शाम मेरे बचपन का प्रिय मित्र अरुण और उसकी माता जी मेरे घर पर आये| मेरे मित्र ने दरवाजा खटखटाया राजेश घर पर है| मैं सोफे पर बैठा था,मैं उठा और कहा अरुण आओ भाई अंदर आओ मैंने देखा आंटी जी भी आयी है मुझसे मिलने, मैं उन्हें देखकर बहुत खुश हो गया और उनके पैर छूकर लिपट गया, मेरी आँखों से आँसू छलक गये| आंटी ने कहा बेटा क्या हुआ क्यों उदास हो गया ? मैंने कहा आंटी जी आज मैं अपने आप को बहुत अकेला महसूस कर रहा था और उनकी बहुत याद आ रही थी, इसलिए आप को देखकर बहुत ही खुश हो गया| मैंने फटाफट चाय बनाई फिर सबने मिलकर चाय पी, फिर हमारी इधर-उधर बातें होने लगीं क्योंकि हम बचपन के साथी थे|

अचानक से मेरे मित्र ने कहा राजेश चल कहीं घूम के आते है| मैंने कहा अरुण कहाँ घूमने जायेंगे फिर उसने कहा खाटू श्याम या मथुरा-वृंदावन चलते हैं| मैंने कहा अरुण, पहले मथुरा-वृन्दावन चलते है| क्योंकि तुम्हारी भाभी की बहुत ही इच्छा थी| फिर उसने कहा ठीक है| हम पहले मथुरा-वृंदावन जायेंगे मम्मी को भी ले जायेंगे मैंने कहा ठीक है| उसने कहा कल मैं ऑफिस जाकर ट्रेन की टिकट बुक करवाता हूँ, मैंने कहा अरुण मैं कभी ट्रेन से कहीं भी नहीं गया हूँ, इसलिए कि मुझे डर लगता था, लेकिन कोई बात नहीं मैं चला जाऊंगा| फिर उसने देहरादून से डायरेक्ट मथुरा के लिए टिकट कर दी| मैंने ऑफिस से शुक्रवार की छुट्टी ले ली और शनिवार, रविवार की छुट्टी रहती है| हमारी ट्रेन की टिकट बृहस्पतिवार रात 10:00 बजे की थी| फिर क्या था हम चल दिये मथुरा वृंदावन के लिए और फिर सुबह 06:30 बजे हम मथुरा पहुँच गये|

हमने बाहर से ऑटो बुक कर वृंदावन अनिरुधाचार्य जी महाराज के गौरी गोपाल आश्रम पहुँच गये| हमने पहले मंदिर में दर्शन कर भण्डारा खाया और फिर अनिरुधाचार्य जी की कथा सुनने चले गये| एक घंटा कथा सुनकर हम गौरी गोपाल आश्रम में रह रही 310 वृद्ध माताओं से मिलने गए सबसे मिलकर बहुत ही अच्छा लगा| फिर हमने पास ही में रूम ले रखा था| हम वहां सामान छोड़कर फिर बांके बिहारी जी के मंदिर चले गये| वहाँ हमे बांके बिहारी जी के दर्शन कर बहुत ही मन की शांति प्राप्त हुई| फिर हम शाम को इस्कॉन मंदिर गए| हमने सुना इस्कॉन मंदिर पूरे विश्व में भगवान श्री कृष्ण की भक्ति के लिए प्रसिद्ध है| इस्कॉन मंदिर की स्थापना श्री भक्त वेदांत स्वामी प्रभुवाद जी ने 1966 में की थी| एक छोटे से समूह से तैयार हुआ इस्कॉन मंदिर आज भक्ति का सुन्दर उदाहरण बन चुका है|

रात को हम प्रेम मंदिर गए, प्रेम मंदिर श्री जगत गुरु कृपाल महाराज जी ने पूरे संगमरमर पत्थर का बनवाया था| और यह मंदिर बहुत ही सुन्दर है| फिर हम दूसरे दिन नंदगाँव गए, श्री कृष्ण जी के पुराने घर जहाँ श्री कृष्ण जी पले-बड़े थे| हमने पूरे गाँव के दर्शन किये और फिर हम राधा रानी के अटारी बरसाना मंदिर गए, हमने वहाँ राधा रानी के दर्शन किये, बहुत ही सुन्दर मंदिर था| मन बहुत ही प्रसन्न हो गया| ऐसा लगा जैसे हम साक्षात राधा रानी जी के दर्शन कर रहे है| फिर हमने पूरे वृन्दावन की 21 किलोमीटर की गाडी से परिक्रमा की| हम फिर गोवर्धन मंदिर गये|

हमने राधा रानी कुंड के भी दर्शन किये| हम सब मंदिर घूमकर शाम को फिर वापस गौरी गोपाल आश्रम आ गये| फिर हमने एक बार और वृद्ध माताओं के दर्शन किये| फिर रात को हम आराम करने अपने रूम में चले गये| तीसरे दिन हम सुबह जल्दी उठकर मथुरा के लिए निकल गए वहीँ से हमारी ट्रेन भी थी| फिर हम श्री कृष्ण जी की जन्म भूमि मथुरा गए और हमने वहां मंदिर में दर्शन किये| वहां हमने कारागार भी देखा जहाँ श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ था| वहाँ जाकर हम लोगों को बहुत ही अच्छा लगा| हमे मथुरा वृन्दावन के दर्शन कर बहुत ही सुख का आनन्द हो रहा था| मुझे लगा मेरे साथ मेरी स्वर्गीय पत्नी पुष्पा देवी ने भी मथुरा-वृंदावन के दर्शन किये|

बनराकस

सत्य प्रकाश सिंह
सहायक लेखाधिकारी

आज के इस हाई-स्पीड इंटरनेट, लो-स्पीड धैर्य और फुल-टाइम टेंशन वाले दौर में एक खास प्रजाति की सख्त ज़रूरत है—"बनराकस"। हाँ, वही! "पंचायत" का शरारती, मीटिंग का अनचाहा सलाहकार, और हर गंभीर माहौल का आधिकारिक "मूड ब्रेकर"। पहली नज़र में वह नासमझ लगता है, पर असल में वह समाज का अनौपचारिक "इमोशनल इंजीनियर" होता है। आइए, इस महान चरित्र का सामाजिक विश्लेषण करते हैं—थोड़े ज्ञान के साथ, थोड़ा व्यंग्य और भरपूर मनोरंजन।

सभ्यता के इस डिजिटल महाभारत में, जहाँ हर व्यक्ति अपने-अपने कुरुक्षेत्र में डेटा और डेडलाइन के रथ पर सवार है, वहाँ यह पात्र चुपचाप खड़ा मुस्कुरा रहा है— बनराकस। वह कोई पदाधिकारी नहीं, कोई नीति-निर्माता नहीं, न ही किसी समिति का माननीय सदस्य। फिर भी हर सभा में उसकी उपस्थिति उतनी ही अनिवार्य है, जितनी चाय में चीनी और भाषण में वादे।

आज का मनुष्य सुबह सूर्योदय से नहीं, नोटिफिकेशन से जागता है। आँख खुलते ही अंगूठा राष्ट्रनिर्माण में लग जाता है—स्क्रीन पर स्क्रॉल करते हुए। ऑफिस में बॉस की भौंहें, घर में बजट का गणित, और सोशल मीडिया पर तुलना का तांडव—हँसी ने मानो इस्तीफा दे दिया है। ऐसे गंभीर समय में बनराकस का प्रवेश होता है, बिना निमंत्रण, बिना एजेंडा, और बिना भय के।

मीटिंग में जब "रणनीतिक दृष्टिकोण" और "दीर्घकालिक योजना" जैसे शब्दों का वजन टेबल को झुकाने लगता है, तब वह अपनी निष्कपट आवाज़ में पूछ बैठता है

"सर, ये योजना पिछले वर्ष वाली की जुड़वां बहन है या इस बार सच में कुछ करेगी?" क्षणभर को सन्नाटा...फिर धीमी हँसी.... फिर तेज़। तनाव की दीवार में एक महीन दरार पड़ जाती है।

समाज ने उसे 'नासमझ' घोषित कर रखा है, क्योंकि वह समझदारी की परिभाषा पर प्रश्नचिह्न लगा देता है। जब अधिकारी अपनी वाणी में विकास का इंद्रधनुष खींचते हैं, तब बंराकस सीधा प्रश्न करता है "सर, ये काम तो टालमटोल में लग गया है, कल पर छोड़ दें?" यह कोई झूठा प्रशंसा नहीं, बल्कि व्यवस्था की उस गड़बड़ी पर तंज है, जो हमें नजर नहीं आती। उसके शब्द व्यंग्य के तीर हैं नोकदार, पर विषरहित। वह कटाक्ष करता है, पर क्रोध नहीं बोता। वह हँसाता है, पर अपमान नहीं करता। उसकी कला अद्भुत है कटाक्ष में करुणा, और मज़ाक में संदेश।

आज का समाज शिष्टाचार की चाशनी में डूबा हुआ है। "कृपया उचित संज्ञान लें", "आपकी असीम कृपा होगी", "विषयक संदर्भ में निवेदन है"—ऐसे वाक्य हवा में ऐसे तैरते हैं जैसे निर्णय कभी धरती पर उतरेंगे ही नहीं। तभी बनराकस कहता है "भाई, काम करना है तो करो, नहीं तो चाय पी लेते हैं।" उसकी यह उक्ति सभ्यता की चकाचौंध में एक देहाती सत्य की तरह चमकती है। वह दिखावे को चुनौती नहीं देता, बस उसे हल्का कर देता है।

जब घर में बहस का बादल छाया हो, या ऑफिस का प्रोजेक्ट धड़ाम से गिर पड़ा हो, तब सबके चेहरे ऐसे गंभीर हो जाते हैं मानो राष्ट्र का भविष्य इन्हीं के कंधों पर टिका हो। उसी घड़ी बनराकस बोलता है "देखो, अगर योजना नहीं चली तो कम से कम अनुभव तो मिलेगा... और आने वाली पीढ़ियों को सुनाने के लिए कहानी भी!" अचानक माहौल में हल्की हवा चलने लगती है। आपातकाल कॉमेडी क्लब में परिवर्तित हो जाता है। क्योंकि वह हमें याद दिलाता है

जीवन केवल परिणामों का हिसाब-किताब नहीं, प्रक्रियाओं की मुस्कान भी है।

सच तो यह है कि हर व्यक्ति के भीतर एक बनराकस निवास करता है पर हम उसे "लोग क्या कहेंगे?" के ताले में बंद कर देते हैं। हमारी 'इमेज' इतनी नाज़ुक हो गई है कि उसमें हँसी की दरार भी असहनीय लगती है। संस्कृति और सोशल प्रोटोकॉल की ऊँची दीवारें हमारे भीतर के उस सरल, साहसी, सच्चे स्वर को बाहर आने से रोकती हैं। पर वही स्वर हमें रचनात्मक बनाता है। वही हमें हल्का करता है। वही सच्चाई से हमारा परिचय कराता है।

यदि समाज से बनराकस लुप्त हो जाएँ, तो सभाएँ लंबी होंगी, भाषण भारी होंगे, और जीवन ऐसा लगेगा मानो बिना नमक की खिचड़ी खा रहे हों। बनराकस कोई साधारण पात्र नहीं।

वह समाज का अनौपचारिक हँसी मंत्री है, सत्य सलाहकार है, तनाव नियंत्रक है।

वह सिखाता है—

- हँसना कमजोरी नहीं, आत्मबल है।
- सरलता मूर्खता नहीं, परिपक्वता का दूसरा नाम है।
- व्यंग्य विरोध नहीं, सुधार का संकेत है।

इसलिए यदि आपके ऑफिस, परिवार या समाज में कोई बनराकस नहीं है, तो सावधान हो जाइए—गंभीरता का साम्राज्य स्थापित हो चुका है। आइए, अपने भीतर के बनराकस को निर्वासन से मुक्त करें। उसे थोड़ा बोलने दें, थोड़ा मुस्कुराने दें, थोड़ा प्रश्न करने दें। क्योंकि जहाँ बनराकस होता है वहाँ चर्चा में रंग होता है,वातावरण में जीवन होता है,और गंभीरता भी थोड़ी शालीन होकर बैठती है। और अंततः, शायद यही आधुनिक समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है एक ऐसा विदूषक, जो हमें हमारी ही गंभीरता पर हँसना सिखा दे।

स्वतंत्रता दिवस वर्ष 2025

हिन्दी कार्यशाला

ViewSonic

SUPREME AUDIT INSTITUTION
Dedicated to Truth in Public Interest
देहरादून

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2025

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता

बाल चित्रकला प्रतियोगिता

निबंध प्रतियोगिता

बालकों द्वारा कवितापाठ प्रस्तुति

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

चित्रकला प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार वितरण

रंगोली प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2025 समापन समारोह

हिन्दी पत्रिका “हिमज्योति” का विमोचन

ऑडिट सप्ताह वर्ष 2025 की झलकियाँ

कल्याण अनुभाग

1. श्री रोहित रतूड़ी, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 28.07.2025 से 03.08.2025 तक अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में आयोजित State Badminton Championship में प्रतिभाग किया।

2. श्री राकेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 08.09.2025 से 14.09.2025 तक नई दिल्ली में आयोजित UTT National ranking Table Tennis Championship 2025-26 में प्रतिभाग किया।

3. श्री सन्नी राणा, सहा.पर्यवेक्षक ने दिनांक 07.10.2025 से 21.10.2025 तक लखनऊ में आयोजित Vinoo Makand Trophy Tournament 2025-26 में प्रतिभाग किया।

4. श्री संजीव जखमोला, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक: 15.10.2025 से 19.11.2025 तक कानपुर में आयोजित Ranji Trophy camp & Tournament 2025-26 में प्रतिभाग किया।

5. श्री राकेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 09.11.2025 से 16.11.2025 तक पंचकुला में आयोजित UTT National ranking Table Tennis Championship 2025-26 में प्रतिभाग किया।

6. श्री सन्नी राणा, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक: 16.11.2025 से 22.12.2025 तक काशीपुर में आयोजित Men's Under 19 Cooch Behar Trophy Tournament 2025-26 में प्रतिभाग किया।

7. श्री नीटू कुमार, लेखाकार ने दिनांक 06.12.2025 से 17.12.2025 तक गोवा में आयोजित All India Civil Services Football Tournament 2025-26 में प्रतिभाग किया।

8. श्री शम्भू जुयाल (वरि.लेखाकार), आमिर खान (लेखाकार), जगदीश टोकस (लेखाकार), प्रभाकर मिश्रा (लेखाकार), वसीम युनूस (सहायक पर्यवेक्षक) ने दिनांक: 08.12.2025 से 15.12.2025 तक तिसवाडी, गोवा में आयोजित All India Civil Services Football Tournament 2025-26, में प्रतिभाग किया।

9. श्री राकेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक: 29.12.2025 से 31.12.2025 तक Multipurpose Hall, कौलागढ़, देहरादून CGEWCC Table Tennis Championship में प्रतिभाग किया।

सेवानिवृत्ति
(माह जुलाई 2025 से दिसंबर 2025)

दिनांक:30.08.2025 को श्री सुरेश चन्द, वरि.लेखाकार की सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई, उपमहालेखाकार स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

दिनांक:30.09.2025 को श्री गणेश प्रसाद, वरि.लेखाधिकारी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री लोकेश दताल, वरि.उपमहालेखाकार स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

दिनांक: 30.09.2025 को श्री दिनेश चन्द, सहा.पर्यवेक्षक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर मो.परवेज़ आलम, महालेखाकार स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए।

दिनांक: 30.11.2025 को श्री दीप चन्द बन्सवाल, वरि.लेखाधिकारी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई, उपमहालेखकार पौधा भेट करते हुए।

दिनांक: 31.12.2025 को श्री कृष्ण चन्द्र जोशी, वरि.लेखाधिकारी की सेवानिवृति के अवसर पर श्री लोकेश दताल, वरि.उपमहालेखाकार स्मृति चिह्न देते हुए।

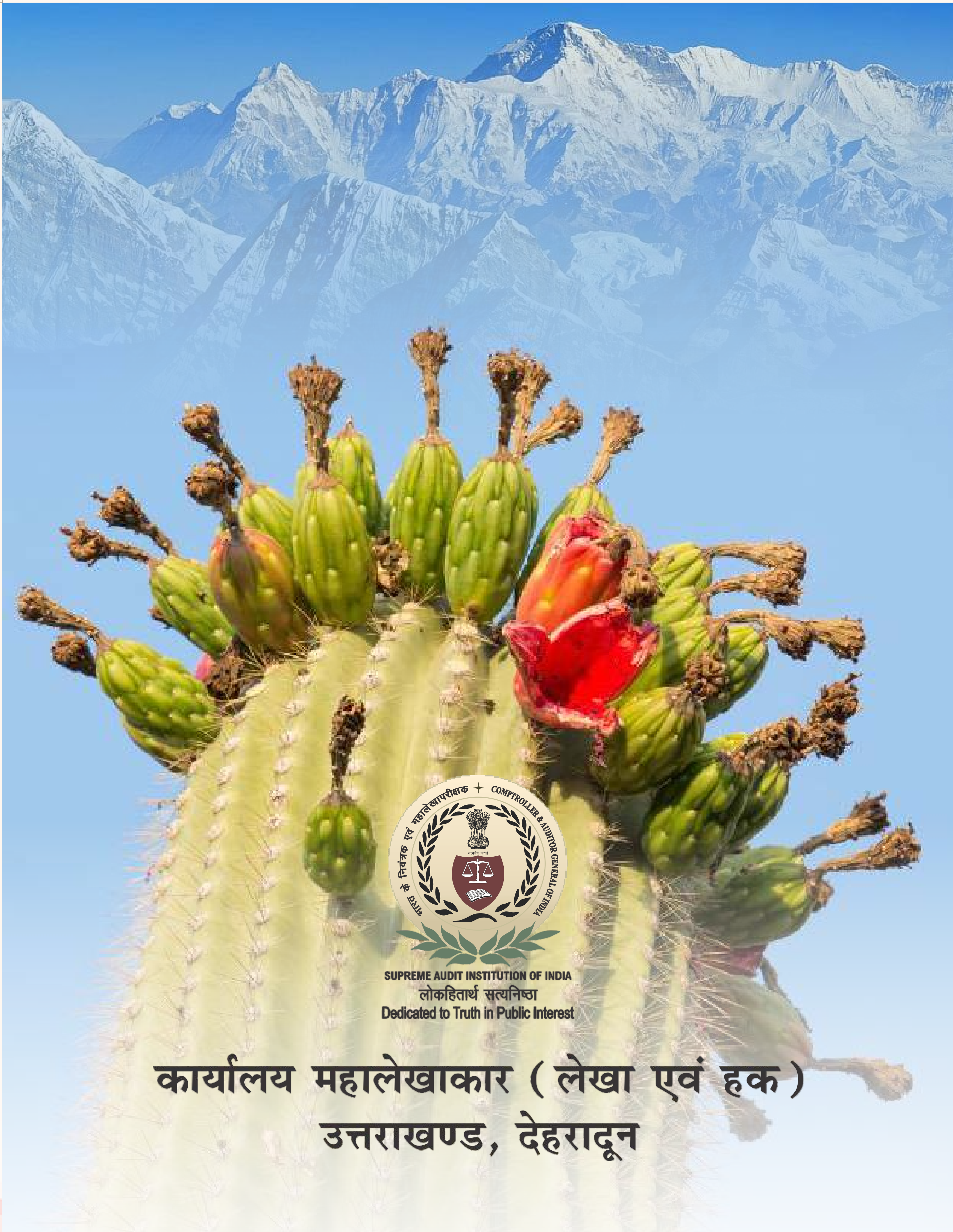

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक)
उत्तराखण्ड, देहरादून